तारांगण

बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृहपत्रिका मार्च, 2025

TAARANGAN

Bank of India's Quarterly House Journal March, 2025

BOI issued sanction letters under MSGS - MSMF Presented by FM Nirmala Sitharaman on Feb. 17, 2025 at Mumbai

बैंक ऑफ़ इंडिया
रिश्तों की जमापूँजी
Relationship beyond banking

6 रिश्तों की जमापूंजी, सफलता की कुंजी

16 MSMEs and Banking: Navigating the Budgets Impact

वर्ष 2047 तक सभी को बीमा......................18

एक दर्द, जिसकी दवा आजतक नहीं मिल पायी....21

AI : Friend & Foe... 25

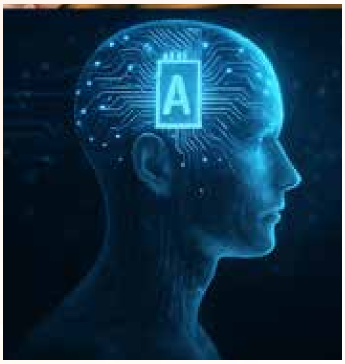

Trade Wars and Its Effect on Global Economy.. 27

कमला जी की फिक्स्ड डिपॉजिट..................29

Balancing Act: Empowering Mothers Returning to Work at Bank of India.................. 38

3 Special Mention Awards 2024

डीपफेक: एक डिजिटल धोखा/सतर्कता 34

एक बगल में चाँद होगा, एक बगल में रोटियां: हकीकत और स्वप्न का द्वंद्व 42

महिला सशक्तिकरण का पर्याय है : स्वयं-सहायता समूह (SHG) 48

कोषिक्कोड - साहित्य का शहर; प्यार का भी.......53

पुस्तक समीक्षा: - अक्टूबर जंक्शन 51

कुम्भ मेला क्षेत्र - प्रयागराज में बैंक ऑफ इंडिया .56

भारत सरकार का उपक्रम (A Government of India undertaking)

बैंक ऑफ इंडिया की द्विभाषी तिमाही गृहपत्रिका

A Quarterly Bilingual House Journal of Bank of India

अंक: जनवरी - मार्च 2025

Issue: Jan. - March 2025

संरक्षक/Patron

रजनीश कर्नाटक

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

Rajneesh Karnatak

MD & CEO

संपादकीय मंडल/Editorial Board

ए.के. पाठक

मुख्य महाप्रबंधक

A. K. Pathak

Chief General Manager

बी.एस. फोनिया

उप महाप्रबंधक

B.S. Fonia

DGM HR

मऊ मैत्रा

संपादक

Mou Maitra

Editor

अमरीश कुमार

सह-संपादक

Amrish Kumar

Co-Editor

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों ।

Printed, Published and Edited by

Mou Maitra on behalf of Bank of India,
Published from Head Office :
Star House, G-5, 'G' Block,
Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai - 400 051 and printed at

PRINT PLUS PVT. LTD.,
212, Swastik Chambers, S.T. Road,
Chumbur, Mumbai 400071

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ / MD & CEO

प्रिय साथियो

तारांगण के मार्च 2025 अंक के माध्यम से आपको संबोधित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। वित्तीय वर्ष 2024-25, अच्छे प्रदर्शन और कारोबार में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ एक शानदार वर्ष रहा है।

यथा 31 मार्च 2025, बैंक का वैश्विक कारोबार मिक्स 12% की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि के साथ ₹14.82 लाख करोड़ हो गया है। साथ ही बढ़ोतरी करते हुए वैश्विक जमाराशियाँ ₹8,16,541 करोड़ तथा वैश्विक अग्रिम ₹6,66,047 करोड़ हो गए हैं। वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु परिचालन लाभ 17% की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि के साथ ₹16,412 करोड़, जबकि निवल लाभ वर्ष-दर-वर्ष 46% की वृद्धि के साथ ₹9,219 करोड़ रहा है। इसके अतिरिक्त, बैंक ने विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अपनाते हुए, सकल और निवल एनपीए के स्तर में उल्लेखनीय घटोतरी करके वित्तीय अनुशासन एवं निरंतर वृद्धि के दृढ़ संकल्प को दोहराया है।

बैंक की डिजिटल नवाचार, ग्राहक केंद्रित सेवाओं और परिचालन दक्षता के प्रति प्रतिबद्धता के साथ-साथ उन्नत उत्पादों पर फोकस बनाए रखने की कार्यनीति ने प्रभावशाली नतीजे दिए हैं।

गृह पत्रिका के तौर पर तारांगण हमारी उपलब्धियों, आकांक्षाओं और सहयोगपूर्ण कार्यसंस्कृति को प्रस्तुत करने वाला एक जीवंत मंच है। आप सभी को अपने कार्यानुभव, फील्ड में अर्जित ज्ञान एवं समझ को गृहपत्रिका के माध्यम से साझा करते रहना चाहिए, ताकि उससे सभी लाभान्वित हो सकें। शानदार वित्तीय वर्ष के लिए पुनः बधाई देते हुए, मैं आप सभी से उत्कृष्टता के लिए साथ मिलकर कदम बढ़ाने के लिए आह्वान करता हूँ।

नए वित्तीय वर्ष के शुभारंभ पर, मेरी आप सभी से अपील है कि सतत कारोबार को प्राथमिकता देते हुए कॉर्पोरेट लक्ष्यों की प्राप्ति में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दें। आपकी निरंतर सफलता, समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित

Dear Colleagues,

It gives me immense pleasure to address you through the March 2025 edition of Taarangan. The financial year 2024-25 has been a remarkable year marked by strong performance and outstanding growth.

As of March 31, 2025, global business mix of the bank increased by 12% year-on-year to ₹14.82 lakh crore. Global deposits grew to ₹8,16,541 crore and advances increased to ₹6,66,047 crore. Operating profit for FY 2024-25 grew by 17% year-on-year to ₹16,412 crore, while net profit increased to ₹9,219 crore with Y-o-Y growth of 46%. Furthermore, the Bank's prudent approach has led to a commendable reduction in both gross and net NPA levels, reinforcing the commitment to financial discipline and sustainable growth.

The Bank's commitment to digital innovation, customer-centric services, and operational excellence—along with a strong focus on innovative products have yielded impressive results.

Taarangan, the in-house publication of the Bank, serves as a vibrant platform to showcase achievements, aspirations and collaborative work culture. I encourage everyone to contribute by sharing experiences, insights and knowledge gained in the field, enriching collective understanding. Once again, I Congratulate you all on an outstanding financial year and let us continue to strive for excellence together.

As the Bank embark on the next financial year, I appeal to you all to put your best efforts towards achievement of corporate goal with focus on sustainable business. Wishing you all continued success, growth, and prosperity!

With Best Wishes,

(रजनीश कर्नाटक)/(Rajneesh Karnatak)

Bank of India
Relationship beyond banking

संपादकीय / Editorial

प्रिय पाठको

हर तिमाही गृहपत्रिका 'तारांगण' का नवीनतम अंक आपको सौंपना, मेरे लिए खुशी का सबब है। तारांगण के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक तिमाही के दौरान बैंक में होने वाली गतिविधियों के बारे में अपने पाठकों को अपडेट करना है। एक प्रेरणास्रोत के रूप में हमारे एमडी एवं सीईओ महोदय ने, अपने संदेश में गत वित्तीय वर्ष के उत्कृष्ट परिणामों की बधाई देते हुए, सभी स्टाफ सदस्यों के प्रयासों की सराहना की है। उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के साथ पिछले वित्तीय वर्ष को विदाई देते हुए, वित्तीय वर्ष 2025-26 में प्रवेश करना हमारे लिए उत्साहवर्धक रहा है। इसलिए कुशल नेतृत्व के मार्गदर्शन में कारोबार वृद्धि और उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन की गति को बनाए रखते हुए, हमें वित्तीय वर्ष 2025-26 के लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित रखना है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तृत हमारा विशाल शाखा नेटवर्क देश की आर्थिक प्रगति में हमारे समर्पित प्रयासों की परिणति को चिह्नित करता है।

नए उत्पाद लाँच करने, अपनी बैंकिंग सेवाओं के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को उन्नत बनाने, नई शाखाएं खोलने सहित मार्च 2025 तिमाही में बैंक में अनेक गतिविधियां हुई हैं। इस दौरान दो महत्वपूर्ण अवसरों यथा 'गणतंत्र दिवस' और 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' को भी हमने धूमधाम से मनाया। वित्तीय समावेशन और सरकार समर्थित योजनाओं को प्राथमिकता से कार्यान्वित करके बैंक ग्राहकों एवं नागरिकों को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभा रहा है।

पत्रिका के इस अंक में, हमने प्रेरक प्रसंग स्वरूप बैंक के सहयोग से सफल हुए ग्राहकों की कहानियाँ शामिल करने का प्रयास किया है, साथ ही विविध विषयों जैसे एमएसएमई, कृत्रिम मेधा, देश में बीमा क्षेत्र की पहुँच और पैठ, डीपफेक जोखिम तथा अन्य साहित्यिक विषयों पर लेख एवं कविताओं को संकलित किया गया है। हमारी गृह-पत्रिका का यह संस्करण स्टाफ सदस्यों की प्रतिभा और रचनाशीलता का परिचायक है। पत्रिका में प्रकाशन हेतु हमें लेख, किस्से, कहानियाँ, पुस्तक समीक्षाएं, कविताएं आदि उपलब्ध करवाने वाले सभी स्टाफ सदस्यों का मैं संपादकीय टीम की ओर से आभार व्यक्त करती हूँ। आपकी लेखनी न केवल हमारे प्रकाशन को बेहतर बनाती है, बल्कि पूरे बैंक में नवाचार और सृजनशीलता का संचार करती है। मेरा आप सभी से आग्रह है कि समय के साथ प्रौद्योगिकी को अपनाना जारी रखें, अपने मूल्यों को बनाए रखें और अटूट समर्पण के साथ बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाते हुए राष्ट्र की सेवा करें। आइए साथ मिलकर, हम बैंक ऑफ इंडिया को एक मजबूत ब्रांड एवं समावेशी बैंक के रूप में और ऊपर ले जाएँ। पत्रिका के इस अंक को पढ़ें और अपनी प्रतिक्रियाएं हमें HeadOffice.Taaranganbankofindia.co.in पर अवश्य भेजें।

शुभकामनाओं सहित

Dear Readers

It is a matter of great pleasure for me to hand over the latest issue of the quarterly in-house publication 'Tarangan' to you. The main objective of publishing Tarangan is to update our readers about the activities taking place in the Bank during each quarter. As a source of inspiration, our MD & CEO Sir, in his message congratulated us for the excellent results of the last financial year and appreciated the efforts of all the staff members. It has been encouraging for us to bid farewell to the last financial year with excellent performance and enter the FY 2025-26 with enthusiasm. Therefore, under the guidance of able leadership, while maintaining the momentum of business growth and excellent performance, we have to remain focused on the goals of the FY 2025-26. Our vast branch network spread across urban and rural areas marks the culmination of our dedicated efforts in the economic progress of the country.

The Bank has witnessed many activities in the March 2025 quarter, including launching new products, upgrading digital platforms for its banking services, opening new branches. During this period, we celebrated two important occasions like 'Republic Day' and 'International Women's Day' with great pomp. The bank is playing an important role in empowering customers and citizens by implementing financial inclusion and government-supported schemes on priority.

In this issue of the magazine, we have tried to include stories of customers who have succeeded with the support of the bank as an inspirational event, along with articles and poems on various topics like MSME, artificial intelligence, reach and penetration of the insurance sector in the country, deepfake risk and other literary topics. This edition of our in-house magazine is a reflection of the talent and creativity of the staff members. On behalf of the editorial team, I thank all the staff members who provided us with articles, anecdotes, stories, book reviews, poems etc. for publication in the magazine. Your writing not only improves our publication, but also infuses innovation and creativity in the entire bank. I urge all of you to continue adopting technology with time, maintain your values and serve the nation by providing banking services with unwavering dedication. Together, let us take Bank of India to greater heights as a stronger brand and more inclusive bank. Read this issue of the magazine and send your feedback to us at HeadOffice.Taarangan@bankofindia.co.in.

With best wishes

(मऊ मैत्रा) /(Mou Maitra)

"रिश्तों की जमापूंजी, सफलता की कुंजी"

जब एक बैंक दूरदर्शिता के साथ कार्य करता है, तो उसकी पूंजी मात्र धनराशि न होकर, परिवर्तन का साधन बन जाती है। यह पूंजी छोटे उद्योगों को न केवल वित्तीय सहायता प्रदान करती है, बल्कि उन्हें आर्थिक समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर करती है, जैसे बीज को वृक्ष में परिवर्तित करने वाली शक्ति होती है। इसे ही सही मायनों में 'रिश्तों की जमापूंजी' कहते हैं। यह एक ऐसा भाव है जो कहता है: हम न केवल आपकी जमाराशियों को बढ़ाएँगे, बल्कि आपके सपनों को साकार करने में भी सहायक होंगे; हम न केवल वित्तपोषण करेंगे, बल्कि आपके उत्थान के भागीदार भी बनेंगे।

हावड़ा अंचल

रवि कोईरी का प्रेरणादायक सफर

रवि कोईरी, श्रीरामपुर के एक साधारण युवा, जिनकी जिंदगी ने उस समय नया मोड़ लिया जब 2020 के लॉकडाउन ने उनकी दुनिया को हिला दिया। उस दौर में, जब पूरा देश ठहर सा गया था, रवि की छोटी सी मोबाइल रिपेयरिंग की गुमटी उनकी आजीविका का एकमात्र सहारा थी। लेकिन सीमित आय और बढ़ते खर्चों ने उनके सपनों को जैसे कुचल दिया था। फिर भी, रवि ने हार नहीं मानी। उनकी मेहनत और लगन ने उन्हें बैंक ऑफ इंडिया की श्रीरामपुर शाखा तक पहुँचाया, जहाँ तत्कालीन मैनेजर श्री नूर ए बशर ने उनकी प्रतिभा और जज़्बे को पहचाना।

2021 में, बैंक ऑफ इंडिया की मुद्रा लोन योजना के तहत रवि को 1.90 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत हुआ। यह राशि उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं थी। रवि ने इस राशि का उपयोग अपनी छोटी सी गुमटी को एक आधुनिक मोबाइल रिपेयरिंग और एक्सेसरीज़ की दुकान में बदलने के लिए किया। उन्होंने नया उपकरण खरीदा, दुकान का इंटीरियर बेहतर किया, और कुछ नए मोबाइल फोन और एक्सेसरीज़ का स्टॉक जोड़ा। उनकी मेहनत और ग्राहकों के प्रति ईमानदारी ने जल्द ही श्रीरामपुर के स्थानीय बाज़ार में उनकी दुकान को मशहूर कर दिया।

रवि की दुकान न केवल मोबाइल रिपेयरिंग के लिए, बल्कि किफायती कीमतों पर नए और रीफर्बिश्ड फोन बेचने के लिए भी जानी जाने लगी। उनकी ग्राहक सेवा और तकनीकी कौशल ने उन्हें इलाके में एक भरोसेमंद नाम बना दिया। धीरे-धीरे उनकी आय बढ़ने लगी, और उन्होंने न केवल अपना पहला ऋण समय से पहले चुका दिया, बल्कि अपनी दुकान को और विस्तार देने का सपना देखना शुरू किया। आज, रवि श्रीरामपुर के मुख्य बाज़ार में एक बड़ी और आधुनिक मोबाइल शॉप के मालिक हैं, जहाँ वे न केवल फोन बेचते हैं, बल्कि मोबाइल एक्सेसरीज़ और रिपेयरिंग सेवाएँ भी प्रदान करते हैं।

रवि की महत्वाकांक्षा यहीं नहीं रुकी। अब वे एक और दुकान खोलने की योजना बना रहे हैं, और इसके लिए वे फिर से बैंक ऑफ इंडिया की ओर रुख करना चाहते हैं। रवि कहते हैं, बैंक ऑफ इंडिया ने मेरे सबसे मुश्किल समय में मेरा साथ दिया। उनकी मदद के बिना मैं यहाँ तक नहीं पहुँच पाता। उनकी यह बात बैंक के प्रति उनके विश्वास और संतुष्टि को दर्शाती है। रवि ने अपनी सफलता का श्रेय न केवल अपनी मेहनत को दिया, बल्कि बैंक के उस सहयोग को भी, जिसने उनके सपनों को पंख दिए।

आज रवि न केवल अपने परिवार के लिए एक मज़बूत आर्थिक आधार बना चुके हैं, बल्कि अपने समुदाय के लिए भी एक प्रेरणा हैं। उनकी कहानी यह सिखाती है कि दृढ़ संकल्प, मेहनत, और सही समय पर मिला सहयोग किसी की भी जिंदगी बदल सकता है। बैंक ऑफ इंडिया की श्रीरामपुर शाखा के लिए रवि जैसे ग्राहक गर्व का विषय हैं।

चंडीगढ़ अंचल

स्टार इन्फ्रास्ट्रक्चर ऋण ने बदली 'कृष्ण' की किस्मत

मैं, कृष्ण, पुत्र श्री जिले सिंह, गांव उपली, तहसील घरौंडा, जिला करनाल -हरियाणा का रहने वाला हूं। मैं पहले कंबाइन हार्वेस्टर पर फोरमैन/हेल्पर का काम किया करता था। इन मशीनों का उपयोग मुख्य रूप से गेहूं, चावल, मक्का, जौ और सोयाबीन सहित अनाज की कई फसलों की कटाई के लिए किया जाता है। उसी से ही मेरे घर का थोड़ा बहुत गुजारा हुआ करता था।

मैं अक्सर अपने मालिक की कंबाइन हार्वेस्टर की सर्विस के लिए कृष्णा कंबाइंस सेक्टर - 4 करनाल में जाया करता था। वहीं से मुझे बैंक ऑफ इंडिया की स्टार कृषि इनफ्रास्टाकचर योजना (AF Scheme) के बारे में पता चला। इस योजना (AF Scheme) के अंतर्गत कंबाइन खरीदने के लिए सहजता से ऋण मिल सकता है। यह पता चलते ही मेरे मन में उत्साह की किरण फूटी। योजना को अच्छे तरीके से समझने के लिए मैं अपनी नजदीकी बैंक ऑफ इंडिया की टपराना शाखा पहुँचा।

मैं वहाँ शाखा प्रबंधक से मिला जिन्होंने मुझे इस स्कीम के बारे में पूरी जानकारी दी। सभी औपचारिकताओं के पूरे होने पर बैंक ने मुझे कंबाइन हार्वेस्टर खरीदने के लिए ₹ 25.00 लाख का लोन स्वीकृत कर दिया और दिनांक 22.03.2024 को, मैं कंबाइन हार्वेस्टर का मालिक बन गया। मैं बैंक ऑफ इंडिया टपराना शाखा का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझ जैसे एक आम आदमी की जिन्दगी बदल दी और मेरे साथ अन्य तीन लोगों को भी रोजगार मिल गया।

(ग्राहक से प्राप्त पत्र)

मेरा मानना है कि अगर हम किसी कार्य में निपुण हों तो बैंक ऑफ इंडिया के साथ जुड़ कर छोटे व्यापार के लिए ऋण लेकर अपना कारोबार बढ़ा सकते हैं। साथ ही अपने अन्य साथियों के लिए भी रोजगार पैदा कर सकते हैं। कंबाइन हार्वेस्टर मिलने के बाद अब मेरे परिवार का जीवन यापन बहुत सुधर गया है और मैं अपनी मेहनत के बल पर ऋण की किश्त भी समय से पहले चुकाने में सक्षम हो गया हूँ। कहते हैं कि 'जहाँ चाह, वहीं राह' परन्तु मैं कहूँगा कि-अगर हो चाह तो पकड़ो बैंक ऑफ इंडिया की राह।

तिरूवनंतपुरम अंचल

स्टार उद्यमी श्रीविद्या वी नायर बनी महिला सशक्तिकरण की मिसाल

आज के समाज में महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं – चाहे वह विज्ञान हो, राजनीति हो, व्यापार हो या खेल। लेकिन एक सफल महिला बनने का मार्ग आसान नहीं होता। सामाजिक रूढ़ियाँ, पारिवारिक दबाव, लैंगिक भेदभाव, और अवसरों की कमी जैसी अनेक बाधाएँ उनके सामने आती हैं। इन सभी चुनौतियों के बावजूद जो महिलाएँ अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करती हैं, वे वास्तव में समाज के लिए प्रेरणा बन जाती हैं। महिला सशक्तिकरण तभी सार्थक होगा जब हम न केवल उन्हें अवसर देंगे, बल्कि उनके संघर्षों को समझकर उन्हें समर्थन भी देंगे।

जब महिला सशक्तिकरण और स्वरोज़गार को बढ़ावा देने की बातें हो रही हैं, तब ऐसे उदाहरण हमारे सामने आते हैं जो वास्तव में प्रेरणास्रोत बन जाते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है श्रीविद्या जी का, जिन्होंने कठिनाइयों का सामना करते हुए अपनी मेहनत और बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से अपने उद्यम की सफल शुरुआत की।

श्रीविद्या वी नायर तिरुवनंतपुरम के पट्टम में ओरिगा इंडस्ट्रीज़ के नाम से एक पेपर स्ट्रॉ निर्माण यूनिट का संचालन करती हैं। इस परियोजना के लिए उन्होंने तिरुवनंतपुरम के कई बैंकों से संपर्क किया, लेकिन सब नाकामयाब रहा ।

इसी दौरान उनके भाई, जो बैंक ऑफ इंडिया की परुत्तिपारा शाखा के ग्राहक थे, उन्होंने श्रीविद्या जी को बैंक ऑफ़ इंडिया से संपर्क करने की सलाह दी। जब वे शाखा पहुँचीं, तो वहाँ लगे एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) के बड़े फ्लेक्स बोर्ड ने उन्हें आशा और ऊर्जा से भर दिया।

शाखा के नए शाखा प्रबंधक श्री प्रियदर्शन ने उनका स्वागत किया और उनके व्यवसायिक विचार को गंभीरता से सुना। उन्होंने उन्हें आंचलिक कार्यालय में स्थित एसएमईयूसीसी विभाग से संपर्क करवाने का आश्वासन दिया। अगले ही दिन बैंक के विपणन अधिकारी श्री विनय रवींद्रन ने उनसे संपर्क किया और उन्हें पूरा मार्गदर्शन प्रदान किया।

एसएमईयूसीसी विभाग के प्रमुख श्रीमती प्रेमलता और अन्य कर्मचारियों ने भी पूरी सकारात्मकता और तत्परता के साथ सहयोग दिया। किसी भी प्रक्रिया में अनावश्यक देरी नहीं की गई और उनकी यूनिट ओरीगा इंडस्ट्रीस का उद्घाटन 12 नवम्बर 2023 को हुआ। आज वह यूनिट सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और तिरुवनंतपुरम के सफल पेपर स्ट्रॉ उत्पादकों में से एक है।

श्रीविद्या जी का मानना है कि अगर दृढ़ निश्चय हो और सही सहयोग मिल जाए, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता। बैंक ऑफ इंडिया जैसे संस्थान जब उद्यमियों का साथ देते हैं, तो वे न केवल व्यक्तिगत सफलता की कहानियाँ लिखते हैं, बल्कि समाज में आत्मनिर्भरता और विकास की नई राह खोलते हैं।

जबलपुर अंचल

अम्मा की गिट्टी फैक्ट्री

मध्यप्रदेश के एक छोटे से गाँव में रहने वाली 43 वर्षीय नीलू राव को लोग प्यार से अम्मा कहते हैं। एक दिन जब अम्मा अपने खेत में काम कर रही थी तो उन्होंने देखा कि उनके गाँव के पास ही सड़क निर्माण का काम शुरू हुआ है और उस सड़क निर्माण के काम में रोज़ ट्रक और ट्रैक्टर से लदी गिट्टी शहर से लाई जा रही हैं। यह देख अम्मा के मन में यह विचार आया कि बाहर से आने वाली गिट्टी पर गाँव के लोग इतना पैसा खर्च कर रहे हैं, जबकि पास ही के नाले में काफी अच्छी गिट्टी मौजूद थी लेकिन उस पर किसी का भी ध्यान नहीं खींच रहा हैं। तभी अम्मा ने यह ठान लिया – अब मैं गिट्टी का व्यापार करूँगी। जब गाँव वालों को यह पता चला तो उन्होंने अम्मा का खूब मज़ाक उड़ाया – औरत और गिट्टी का व्यापार? लेकिन अम्मा ने किसी की भी न सुनी और अपने सोच को सफल बनाने हेतु विचार करने लगी। उन्होंने अपना व्यापार शुरू करने के लिए बैंक से लोन लेने का मन बनाया। तभी वह हमारे बैंक ऑफ इंडिया के पनागर शाखा में आयी और पहली बार अपना बैंक खाता खुलवाया। फिर उन्होंने हमारे बैंक में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत ₹5,00,000 के लोन हेतु अपना आवेदन दिया। इतने बड़े लोन को प्रोसैस करते समय शाखा प्रबंधक ने हैरानी से पूछा अम्मा, आप क्या करेंगी इतने पैसों का? अम्मा मुस्कुराईं और बोलीं, गिट्टी बेचूँगी... और देखना, एक दिन मेरे नाम का ट्रक चलेगा। जैसे ही उन्हें बैंक से लोन मिल गया तो उन्होंने सबसे पहले दो स्थानीय मजदूरों को काम पर रखा, एक पुराना ट्रैक्टर किराए पर लिया और नाले से गिट्टी निकालकर पास के निर्माण स्थलों पर सप्लाई शुरू कर दी। फिर धीरे-धीरे उनका काम बढ़ता गया। गाँव में कई जगहों से ऑर्डर आने लगे। कुछ ही महीनों में उन्होंने खुद का ट्रैक्टर खरीद लिया और फिर एक छोटी गिट्टी छंटाई मशीन भी लगवा ली। अम्मा की गिट्टी भोला ग्रेविल डेपो के नाम से पूरे जिले में मशहूर हो गयी है, जो लोग उनका मज़ाक उड़ाया करते थे अब वही उनसे काम मांगने आते हैं। हमारे बैंक का सहयोग पाकर अम्मा ने यह बात साबित कर दी कि सफलता भाग्य नहीं बल्कि धैर्य और कड़ी मेहनत का परिणाम है। आज अम्मा हमारे बैंक के प्रीमियम ग्राहकों में से एक है। उनका हमेशा से यह कहना रहा है कि उम्र तो बस एक नंबर है, अगर इरादे मज़बूत हों तो कोई भी काम छोटा नहीं होता।

पटना अंचल

स्टार विद्या शिक्षा ऋण ने किसलय कुमार को बनाया इंजीनियर

किसलय कुमार की कहानी, सही वित्तीय सहायता, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के साथ अपने सपनों को हकीकत में बदलने का एक प्रेरक प्रसंग है। एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले किसलय ने हमेशा कंप्यूटर साइंस के क्षेत्र में करियर बनाने का सपना देखा था। मजबूत शैक्षणिक रिकॉर्ड और तकनीक के प्रति अटूट जुनून के साथ उन्होंने वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में कंप्यूटर साइंस में बी.टेक डिग्री के लिए प्रवेश लिया।

किसलय को अपनी शिक्षा यात्रा में कई वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जैसा कि कई महत्वाकांक्षी छात्रों के साथ होता है। तभी किसलय ने बैंक ऑफ इंडिया (गुलजारबाग शाखा, पटना अंचल, बिहार) से संपर्क किया, जहाँ उन्होंने 20 लाख रुपये का बिना जमानत वाला स्टार विद्या शिक्षा ऋण लिया। समय पर मिली सहायता ने न केवल उनके आर्थिक बोझ को कम किया बल्कि उन्हें बिना किसी चिंता के पढ़ाई पर पूरा ध्यान केंद्रित करने में मदद की।

किसलय ने अपनी इंजीनियरिंग की डिग्री शानदार अंकों के साथ पूरी की और जल्द ही अमेज़न वेब सर्विसेज में सीनियर सॉफ्टवेयर डेवलपर के पद पर नौकरी प्राप्त की। करियर में प्रगति के साथ, किसलय का एक पेशेवर के रूप में पहला वित्तीय निर्णय भी बैंक ऑफ इंडिया में उनके निरंतर विश्वास का प्रतीक बना-उन्होंने अपनी पहली कार खरीदने के लिए हमारे बैंक से ही वाहन ऋण लिया।

उनकी यात्रा शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति और युवाओं को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने में बैंक ऑफ इंडिया की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाती है।

जोधपुर अंचल

अजमेर में 'स्ट्रीट वेंडर' की व्यवसायिक सफलता की कहानी

अजमेर शहर में रोहन एक कॉलोनी में सड़क पर फल और सब्जियों का ठेला लगाकर आजीविका कमा रहा था। वह बहुत ईमानदारी के साथ अपना कार्य कर रहा था और अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहा था, क्योंकि उसके पास सीमित वित्तीय संसाधन थे। एक दिन बैंक से जाते समय मैंने रोहन से ताज़े फल खरीदते हुए उससे बातचीत की तो पता चला कि वह वित्तपोषण की कमी के कारण अपने कारोबार में वृद्धि नहीं कर पा रहा है। तभी मैंने उसे पीएम स्वनिधि योजना के बारे में बताया और अगले ही दिन बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में आने को कहा। अगले दिन जब वह शाखा में आया तो उसे पीएम स्वनिधि योजना के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उसने पीएम स्वनिधि के अंतर्गत ऋण लेने में रुचि दिखाई और हमने उसका ऋण, पीएम स्वनिधि पोर्टल पर 3 दिन में स्वीकृत कर दिया। ऋण राशि से उसने एक छोटी गाड़ी खरीदी, अतिरिक्त इन्वेंट्री और मार्केटिंग सामग्री भी खरीदी।

अपनी इन्वेंट्री का विस्तार किया: रोहन ने अपने उत्पादों की विविधता बढ़ाई और तरह -तरह के ताज़े फल और सब्जियाँ थोक बाज़ार से लाकर बेचने लगा।

वेंडिग के लिए नया वाहन खरीदा: नई गाड़ी ने रोहन को अपने उत्पादों को अधिक आकर्षक तरीके से प्रदर्शित करने में मदद की, जिससे वह ग्राहकों के दरवाजे पर जाकर डोर-टू-डोर सर्विस शुरू कर पाया और उसकी कमाई में वृद्धि होने लगी।

विपणन में निवेश किया: रोहन ने अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया और स्थानीय विज्ञापनों का उपयोग किया, जिससे उसकी अधिक ग्राहकों तक पहुँच बढ़ी।

इस प्रकार रोहन का व्यवसाय फलने-फूलने लगा। उसकी बिक्री में काफी वृद्धि हुई, जिससे वह ऋण चुकाने और एक स्थिर आय अर्जित करने में सक्षम हो गया। रोहन अपने परिवार को आर्थिक रूप से सहायता करने में सक्षम हो गया, जिससे उन्हें एक स्थिर आय और बेहतर जीवन स्तर मिला।

ऑफ इंडिया द्वारा प्रदान किए गए ऋण ने रोहन को अपने उद्यमी सपनों को साकार करने में मदद की, जिससे उसकी जीविका में सुधार हुआ और उसने स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान दिया। यह सफलता की कहानी सूक्ष्म वित्त और छोटे व्यवसायिक ऋणों के सकारात्मक प्रभाव को उजागर करती है।

Kolkata Zone

Karkinos Healthcare, Manipur

This note is to express our sincere gratitude to the Bank of India for your invaluable support towards the Karkinos Manipur Cancer Control Mission Program, a Public-Private Partnership initiative with the Government of Manipur. This project aims to establish a comprehensive cancer care network in the region, addressing the critical need for accessible and quality treatment.

As you are aware, this ambitious project has faced unforeseen challenges, primarily due to significant social unrest in the region which severely disrupted construction and logistics, leading to delays and cost escalations.

Despite these hurdles, your continued support and understanding have been instrumental in enabling us to make substantial progress. We have successfully partially commissioned the hospital, with Chemotherapy, Radiology, and Radiation Therapy services. Your partnership has been crucial in allowing us to provide these essential services to the people of Manipur.

We are committed to the full commissioning of the hospital and are working diligently to achieve this goal at the earliest with Financial Support from Bank of India. This facility will significantly enhance cancer care accessibility in the region, reducing the burden on patients and their families.

We Thank BOI for unwavering support and belief in our mission. We value our partnership with Bank of India and look forward to continuing our endeavour to make a lasting difference in cancer care in Manipur. (A letter from Karkinos Healthcare)

"उद्यमी वनिता" के रूप में प्रेरणास्त्रोत - विजयालक्ष्मी

आज के बदलते भारत में महिला सशक्तिकरण सिर्फ एक सामाजिक आवश्यकता नहीं, बल्कि आर्थिक विकास की भी अहम कड़ी बन चुका है। महिलाओं की भागीदारी बिना देश की प्रगति अधूरी है। इस दिशा में बैंक ऑफ इंडिया द्वारा शुरू की गई 'उद्यमी वनिता' ऋण योजना एक महत्वपूर्ण पहल है, जो महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए वित्तीय आधार प्रदान करती है।

'उद्यमी वनिता' योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं को स्वरोजगार और छोटे व्यवसायों की स्थापना के लिए प्रोत्साहित करना है। यह योजना महिलाओं को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ते हुए उन्हें सुलभ ऋण और आवश्यक मार्गदर्शन उपलब्ध कराती है।

कई ग्रामीण महिलाएं जैसे मोतियाला विजयलक्ष्मी ने 'उद्यमी वनिता' योजना का लाभ उठाकर मसालों का व्यवसाय शुरू किया और आज वे अन्य महिलाओं को भी रोजगार दे रही हैं।

बैंक ऑफ इंडिया की सहायता से ग्रामीण महिला उद्यमी 'मोतियाला विजयलक्ष्मी' की सफलता की कहानी :

मोतियाला विजयलक्ष्मी ओड़ीशा के पोलसारा के एक छोटे से ग्रामीण गाँव नुआखेरपाली की रहने वाली है। सीमित संसाधनों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बावजूद, विजयलक्ष्मी के मन में अपने खुद का व्यवसाय शुरू करने का सपना हमेशा से था। वह परंपरागत तरीके से मसाले तैयार करने का काम बचपन से ही करती थी, लेकिन अपने इस हुनर को व्यवसाय में बदलने का अवसर उन्हें नहीं मिला। धीरे-धीरे उन्होने इस हुनर को छोटे स्तर पर व्यवसाय में बदलने का निश्चय किया।

शुरुआत में विजयलक्ष्मी ने हाथ से बनाए गए मसालों को गाँव की स्थानीय महिलाओं और दुकानों में बेचना शुरू किया। उनके बनाए मसलों की खुशबू, गुणवत्ता और स्वाद के कारण उनकी मांग बढने लगी। लेकिन संसाधनों और वित्तपोषण की कमी के चलते, वह अपने व्यवसाय को आगे नहीं बढ़ा पा रही थी। उनके पास न तो सही पैकिंग मशीन थी, न ही मसालों को बड़ी मात्रा में पीसने की सुविधा। लेकिन जैसे-जैसे ग्राहकों की संख्या बढने लगी, उन्हें आर्थिक सहायता की आवश्यकता महसूस होने लगी।

विजयालक्ष्मी बैंक ऑफ इंडिया की एक पुरानी ग्राहक थी। उन्होंने बैंक ऑफ इंडिया की नजदीकी शाखा अट्टाबीरा से संपर्क किया तो बैंक के कर्मचारियों ने उन्हें बैंक ऑफ इंडिया द्वारा शुरू की गई 'उद्यमी वनिता' ऋण योजना के बारे में विस्तार से बताया। बैंक कर्मचारियों ने उनका मार्गदर्शन किया और महिला उद्यमियों के लिए विशेष ऋण योजनाओं की जानकारी दी। बैंक ने उनकी मेहनत और व्यवसाय में वृद्धि की संभावना को देखते हुए पहले चरण में 5,000,00 (लाख) का व्यावसायिक ऋण स्वीकृत किया। इस राशि से उन्होंने नई मशीनें खरीदीं, कुछ महिलाओं को रोजगार दिया और अपने काम को एक छोटे यूनिट का रूप दिया।

बैंक ऑफ इंडिया की इस सहायता से न केवल विजयलक्ष्मी का आत्मविश्वास बढ़ा, बल्कि गाँव की अन्य महिलाओं के लिए भी वह प्रेरणा बन गई। इस सहायता से विजयलक्ष्मी ने मसाले पीसने की मशीन खरीदी, एक छोटा गोदाम बनवाया और अपने उत्पादों की आकर्षक पैंकिंग शुरू की। उन्होने अपने ब्रांड का नाम रखा - लक्ष्मी मसाले। आज मोतियाला विजयलक्ष्मी का लक्ष्मी मसाले ब्रांड एक सफल उद्यम बन चुका है। उनका व्यवसाय हर महीने हजारों रुपये का मुनाफा कमा रहा है, और वे गाँव की अन्य महिलाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें भी आत्मनिर्भर बना रही हैं। बैंक ऑफ इंडिया की समय पर की गई वित्तीय सहायता और मार्गदर्शन ने विजयलक्ष्मी की जिंदगी बदल दी। एक साधारण गृहणी से सफल महिला उद्यमी बनने तक का उनका यह सफर दर्शाता है कि अगर सही समय पर वित्तीय सहायता मिले तो ग्रामीण भारत की महिलाएं भी सफल उद्यमी बन सकती हैं।

यह कहानी न केवल मोतियाला विजयलक्ष्मी की है, बल्कि लाखों महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है जो अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रयासरत हैं। बैंक ऑफ इंडिया जैसे वित्तीय संस्थान उनकी सफलता के लिए आधार का काम कर सकते हैं।

MD & CEO Visits / Town Hall Meetings

Town Hall Meeting - Navi Mumbai (FGM West I)

Town Hall Meeting - Ernakulam Zone

Town Hall Meeting - Rajkot Zone

MD & CEO Sir Shri. Rajneesh Karnatak speech at the MK-NSE 2nd Annual Conference on Macroeconomics, Banking & Finance held on February 21, 2025.

MD & CEO Shri. Rajneesh Karnatak presented a Smart Classroom to Asha Bhawan Foundation under Corporate Social Responsibility during his visit to Howrah Zone.

Executive Directors Visits

FGMO Kolkata, organized a 'Customer Contact Program' on 20.02.2025 in the presence of Executive Director Shri P R Rajagopal. During this, General Manager FGMO Kolkata, Shri Manoj Kumar was also present.

Executive Director Shri M. Karthikeyan visited Bank of India Patna Zone on 11.02.2025.

ED Shri M Karthikeyan & ED Shri Subrat Kumar visited New Delhi. During their visit FGMO & New Delhi Zone felicitated Shri M Karthikeyan in presence of GM FGMO Shri Lokesh Krishna and ZM Shri Amit Singh.

Executive Director, Shri Subrat Kumar is seen handing over sanction letter to a customer in the presence of FGM, Patna – Shri Soundarjya B. Sahani during the Customer Outreach Programme held in Patna on 26th February, 2025.

Lt. General Rajeev Puri, Indian Army, presenting memento to Executive Director, Shri Subrat Kumar at Army Headquarters, New Delhi on the occasion of signing ceremony of MOU for Salary Accounts between Bank of India and Indian Army on 4th March, 2025.

कार्यपालक निदेशकों के दौरे

MOU for salary accounts exchanged between Major General V.K. Purohit, Indian Army and Executive Director, Shri Subrat Kumar at Army Headquarters, New Delhi, on 4th March, 2025.

Executive Director, Shree Rajiv Mishra visited Gorakhpur Zone on February 20, 2025. This visit underscored the bank's strategic priorities in business expansion, community engagement, and workforce empowerment

Executive Director Shri Rajiv Mishra visited FGMO Chandigarh on 01.02.2025 for Business Augmentation & Customer Connect Programme.

Executive Director Shri Rajiv Mishra inaugurated the modern and well-structured Shoe house at Mata Mansa Devi Temple, Panchkula sponsored and constructed by the Bank of India under CSR.

MD & CEO Mr. Rajneesh Karnatak graced the inaugural event of ROC on 02.01.2025 with his presence.

MD & CEO Mr. Rajneesh Karnatak graced the inaugural event of ROC on 02.01.2025 with his presence.

CGMs / GMs Visits

मुख्य महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार पाठक की उपस्थिति में एफ़जीएमओ चंडीगढ़ ने ग्राहक आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया।

मुख्य महाप्रबंधक श्री सुधिरंजन पाढ़ी की उपस्थिति में एफ़जीएमओ रांची ने आवास एवं वाहन ऋण एक्स्पो का आयोजन किया।

मुख्य महाप्रबंधक श्री शारदा भूषण राय ने एफ़जीएमओ भोपाल का दौरा किया एवं स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया।

मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश इंग्ले की उपस्थिति में एफ़जीएमओ नई दिल्ली ने ग्राहक आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया।

महाप्रबंधक श्री वासुदेव की उपस्थिति में वाराणसी अंचल ने ग्राहक आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया।

बैंक ऑफ इंडिया ने रक्षक वेतन खाता योजना के लिए भारतीय वायुसेना के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

MSMEs and Banking:Navigating the Budget Impact

-The India Growth Story

At the morning of 1st February, 2025, when our Respected Finance Minister, Nirmala Sitharaman entered into the Parliament to present her 6th Union Budget, she was clear in her mind regarding what was the order of the day, and she had done justice by providing an impetus to MSME sector which was on expected lines. The Union Budget sets the stage for a stronger, more resilient MSME sector, key reforms in investment thresholds, credit accessibility, and inclusive entrepreneurship could lead to a long-term growth of the country.

In India, as per the Economic survey, as on 26th November 2024, 23.24 crores people are engaged in MSME sector, which signifies the importance of MSME sector in the betterment of the Indian Economy and India Inc as a whole. MSME is of great significance to India's growth story, by fostering entrepreneurship and creating a large number of jobs at a relatively low capital cost is really a game changer, this sector is only second to Agriculture with respect to population engagement. To facilitate and provide a boost to MSME, a revamp of Credit Guarantee Scheme for Micro and Small Enterprises (CGTMSE) was undertaken with a whooping amount of Rs.9000 crores in the Corpus of Credit Guarantee Fund Trust for MSEs. Consequently, this had revamped the Credit limit for Guarantee Coverage have enhanced from Rs.2 crore to Rs.5 crore with a further proposal to increase to 10 crores. The Credit Guarantee scheme has a huge role to play in the boost of the MSME sector, the scheme has opened the door to firms/companies with low collateral security to get easy access to credit facility which provides them an opportunity to be a part of India's growth story.

Identifying the MSME as the 'Second Engine' of her budget theme, our FM Nirmala Sitharaman unveiled different measures to give a boost to the MSME sector by enhancing the investment and turnover limit. The FM also proposed to reduce the guarantee fee to 1% for loans in 27 different sectors. The expansion of CGTMSE is likely to increase Credit uptake from Banks, as role of Banks has been second to none in providing Credit to MSME sector and potentially improving Bank's lending portfolios. With comprehensive reforms to investment threshold and credit accessibility, enhancing the MSME classification by doubling the turnover threshold and raising the investment caps by 2.5 times, this recalibration will empower many enterprises to maintain their MSME status while scaling operations.

The Indian Financial Sector is currently at a very pivotal moment, its dependence on Banks to provide credit is on a decline, as other participants are filling this role. Although this paradigm shift has been a long waited and positive development for the country, however, this had brought in a very tough challenge to the Banks. The space for credit growth has been limited due to huge competition brought in by NBFCs & other FIs, at the same time uncompromising focus on quality advance has been a key area where a lot of significance has been provided. Enhanced Financial due diligence, special focus on credit risk has been of huge significance in the way to Credit delivery. Delivering quality credit has been of utmost importance. The main focus has been on 'Return of Capital' rather than 'Return on Capital', as Banks has to take a measured approach so that the increase their loan

book with 'quality' advance rather than increasing the number of Non-performing asset.

The role of Banks in MSME as well as the overall financial sector has been huge, with the implementation of different schemes such as :

- **PM SVANidhi,** a scheme that have enabled all street vendors who were active before 31st March 2020 to have access to quick credit facility, which played an effective role in financial inclusion. With the relaxation of rules, PM SVANidhi has been a key weapon for credit facility even to the poorest of the poor and Banks has successfully carried out the lending process to street vendors.
- **PM MUDRA YOJANA:** A scheme that have provided credit facility upto 10 lacs to Non-Corporates. They are divided into 3 catagories, such as Shishu, Kishor, and Tarun. They are provided to sectors such as Trading, Manufacturing as well as Service Sector. PMMY has been a catalyst for Atmanirbhar Bharat which empowered small business and led to the creating of self -employed youth turning them into 'job creators' rather than Job seekers. PMMY is not just a loan scheme which needed to be implemented, it is a lifeline for millions of dreams, innovation and growth opportunities.
- **PMEGP:** Another vital scheme which helps one to set-up micro-enterprises in the non-farm sector and Government through Banks provides them subsidies with the fulfilment of certain conditions. Through these Govt schemes, Banks provides impetus to employment generation and help an individual set up their own business.
- **DIGITAL PAYMENT SOLUTIONS:** Banks has been constantly promoting Digital payment solutions, such as UPI, Internet Banking and point-of-sale (POS) machines to promote a cashless economy. Banks educate MSME owners on financial management, taxation and investment strategies to help them grow sustainably. A cashless economy has always been the order of the day for reduction of hoarding and formalisation of the economy.
- **NON-FUND CREDIT FACILITY:** In providing Non-Fund Based activities Bank Guarantee (BG), Letter of Credit (LC), Export Credit, Packing Credit, Discounting of Bills, Banks play a very important role in Export Promotion and support MSMEs engaged in international Trade. Export Promotion has also been a key area where a lot of stress is given in budget.
- **INSURANCE COVER:** Banks also over the years, have played an integral role in providing Insurance Cover by providing services such as business insurance, credit insurance, machinery insurance which helps in risk mitigation.

In setting up Incubation centres and start-up financing programs to encourage entrepreneurship in the MSME sector as well as provides cluster-based financing which has immense importance in the growth and development of the nation.

To conclude, Banks has been the backbone of MSME sector, which provides timely and easy access to credit facility, enabling digital transformation, facilitating trade and mitigating financial transformation, financial risks. Moreover, to achieve its full potential, continuous collaboration between banks, policymakers and MSME stakeholders is essential. The BUDGET for 2025-26 had been on the same theme for strengthening financial support mechanisms and ensuring seamless access to banking services which will further empower MSMEs and drive long-term economic development which will promote self-employment and bring the India's growth story to the surface of the world.

Deepanjan Mitra
Manager (Credit)
Nager Bazar Branch
Barasat Zone

"वर्ष 2047 तक सभी को बीमा"

बीमा अपने प्रियजनों को वित्तीय रूप से सुरक्षित करने का रास्ता है। बीमा प्यार का उपहार है जो आपके न होने पर भी आपके परिवार की भलाई सुनिश्चित करता है। बीमा आपके प्रियजनों के लिए भविष्य का एक निवेश है। बीमा आपके व्यापार के जोखिम कम करने का विकल्प है। बीमा आपको भविष्य से चिंता-मुक्त रखने का साधन है।

वैश्विक स्तर पर आर्थिक शक्ति बनकर उभरने का भारत का संकल्प आत्मनिर्भरता एवं आर्थिक मजबूती रूपी दो आधार स्तंभों पर टिका है। दुनियाभर में मैक्रोइकनॉमिक्स के क्षेत्र में नई चुनौतियां सामने आ रही हैं, ऐसे में बीमाकर्ता और पुन:बीमाकर्ता (रीइंश्योरर्स) अर्थव्यवस्था को बाहरी झटकों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बीमा उद्योग की अद्वितीय क्षमता न केवल सभी मोर्चों पर जोखिम को कम करती है बल्कि पूंजी बाजारों को प्रेरित करके देश की प्रगति की नींव भी रखती है। इसे देखते हुए भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (इरडा) का **'2047 तक सभी के लिए बीमा'** अभियान वित्तीय रूप से मजबूत राष्ट्र बनाने के देश के लक्ष्य को साकार करने में एक अनिवार्य भूमिका निभा रहा है।

भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (इरडा):

बीमा ग्राहकों के हितों की रक्षा के लिए वर्ष 1999 में स्थापित इरडा एक नियामक निकाय है। यह बीमा से संबंधित गतिविधियों की निगरानी करते हुए बीमा उद्योग के विकास को नियंत्रित एवं विनियमित करता है।

भारत में बीमा का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन अभी भी इंश्योरेंस पहुंच अपर्याप्त है। बीमा क्षेत्र के नियामक इरडा का कहना है कि साल 2047 तक सभी व्यक्तियों को इंश्योरेंस कवरेज देने के लिए कई लक्ष्य हासिल करने होंगे। इसके लिए ज्यादा से ज्यादा संख्या में बीमा कंपनीयां, इंश्योरेंस प्रोडक्ट की व्यापक शृंखला और अधिक डिस्ट्रीब्यूटर की आवश्यकता है।

भारत में बीमा क्षेत्र की स्थिति:

भारत में बीमा क्षेत्र आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति के कारण पिछले कुछ दशकों में बहुत अधिक विकसित हुआ है। वित्त वर्ष 2026 तक, इसका अनुमानित बाज़ार 222 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है, जो पिछले दो दशकों में 17% की दमदार वार्षिक वृद्धि दर (CGR) को दर्शाता है। वित्त वर्ष 23 में बीमा पहुँच सकल घरेलू उत्पाद का 4.0% रहा। वर्ष 2021 में बीमा घनत्व, जो प्रति व्यक्ति प्रीमियम को मापता है, जीवन बीमा के लिए 91 अमेरिकी डॉलर हो गया, जो वित्त वर्ष 2001 में 11 अमेरिकी डॉलर था। भारत वर्तमान में विश्व का 10वां सबसे बड़ा बाज़ार है, वर्ष 2032 तक यह दुनिया के 6 सबसे बड़े बाज़ारों में शामिल हो जाएगा।

बीमा क्षेत्र से संबंधित चुनौतियाँ :

- **कम स्वीकृति दर:**
  - अन्य देशों की तुलना में भारत में बीमा को व्यापक रूप से नहीं अपनाया जाता है। ऐसा इसलिये है क्योंकि बहुत से लोग या तो बीमा से परिचित नहीं हैं या उस पर विश्वास नहीं करते हैं।
- **उत्पादों में नवाचार का अभाव:**
  - भारतीय बीमा क्षेत्र में उत्पाद नवाचार की गति मंद रही है। कई बीमा कंपनियाँ समान उत्पादों की पेशकश करती हैं, जिससे बाज़ार में उत्पाद श्रंखला की श्रेणी में कमी देखी जाती है।
- **धोखाधड़ी:**
  - धोखाधड़ी में झूठे दावे करना और सूचनाओं को गलत रूप से पेश करना शामिल है।
- **प्रतिभा प्रबंधन:**
  - भारतीय बीमा क्षेत्र प्रतिभा की कमी का सामना कर रहा है। उद्योग को बीमांकिक विज्ञान (एक्चुएरीअल साइंस), जोखिम अंकन, दावे और जोखिम प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में कुशल पेशेवरों की आवश्यकता है।
- **डिजिटलीकरण की धीमी दर:**
  - भारतीय बीमा क्षेत्र अन्य उद्योगों की तुलना में डिजिटलीकरण को अपनाने में धीमा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप अकुशल प्रक्रिया, पारदर्शिता की कमी और ग्राहकों का खराब अनुभव जैसी कई चुनौतियाँ सामने आई हैं।
- **दावा प्रबंधन:**
  - भारत में दावों की प्रक्रिया जटिल, धीमी और अपारदर्शी है, जिससे ग्राहक असंतोष एवं बीमा उद्योग में विश्वास की कमी के रूप में देखा जा सकता है।

भारत सरकार ने वर्ष 2047 तक सभी नागरिकों को बीमा कवरेज प्रदान करने का लक्ष्य रखा है। यह एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य है जिसके लिए सरकार और निजी क्षेत्र के बीच समन्वय और प्रयासों की आवश्यकता होगी।

पहला कदम – बीमा उत्पादों को सरल और सस्ता बनाना होगा। इसके लिए बीमा कंपनियों को लागत कम करने और प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की आवश्यकता होगी। बीमा उत्पादों को विभिन्न जरूरतों और आय समूहों के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए। सस्ती प्रीमियम और लचीली पॉलिसियां बीमा को अधिक समावेशी बना सकती हैं। तकनीक बीमा कवरेज का विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप आसान नामांकन और दावा प्रक्रिया को सुविधाजनक बना सकते हैं। सरकार, बीमा कंपनियों और एनजीओ के बीच सहयोग आवश्यक है।

दूसरा कदम– बीमा जागरूकता को बढ़ाना होगा। इसके लिए सरकार और बीमा कंपनियों को मिलकर जागरूकता अभियान चलाने होंगे। बीमा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है। लोगों को बीमा के लाभों के बारे में शिक्षित करने के लिए अभियान, सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन किया जा सकता है।

- स्वास्थ्य बीमा योजनाओं का विस्तार करना।
- गरीब और वंचित वर्गों के लिए सब्सिडी प्रदान करना।
- स्वास्थ्य बीमा की जागरूकता फैलाना।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करना।
- निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों का सहयोग करना।

ऐसे सुधार जो निवेश और विकास को बढ़ावा देंगे

भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण का बीमा क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के लिए नए विचारों और सक्रियता से भरा दृष्टिकोण न सिर्फ अनुकरणीय है बल्कि यह नई पहल करने की इसकी प्रभावी सक्रियता का भी सूचक है। बीमा क्षेत्र में आईआरडीए के सुधारों में बीमा उत्पादों तक पहुंच में विस्तार करना, इन्हें किफायती बनाना और उद्योग का विकास करना भी शामिल है। जहां सुधारों की मौजूदा प्रक्रियाओं से उद्योग को बढ़ावा मिला है, वहीं देश में बीमा की पैठ बढ़ाने के लिए निम्न उपाय काफी महत्वपूर्ण हैं।

1. उत्पाद नवाचार

सभी के लिए 2047 तक बीमा की उपलब्धता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए, मौजूदा समय में बीमाकर्ताओं को अपने ग्राहकों की जरूरतों को समय-समय पर विशेष समाधानों के साथ समझने की अधिक आवश्यकता है। आज के तेजी से बढ़ते बाजार में आईआरडीएआई के यूज एंड फाइल फ्रेमवर्क से नई पेशकशों को आगे बढ़ाने में मदद मिलती है। साथ ही बीमाकर्ता को भी नए प्रोडक्ट्स तैयार करने और कम अवधि की बीमा योजनाओं को बाजार में पेश करने की आजादी मिलती है।

2. अनुकूल व्यावसायिक माहौल

इरडा द्वारा हाल में घोषित सुधारों से निश्चित ही व्यापार करने की सुविधा को बल मिलेगा और यह इस क्षेत्र में अधिक निवेश को भी आमंत्रित करेगा। इस संबंध में, इरडा द्वारा घोषित महत्वपूर्ण सुधारों में से एक निजी इक्विटी फंड और पूंजी संरचना के लिए नई सीमा है। ये सुधार बीमाकर्ताओं को अधिक पूंजी तक पहुंच बनाने में मदद करने के साथ-साथ अधिक निवेश को आकर्षित करने, अपनी बैलेंस शीट्स मजबूत करने और विकास के अवसरों को जारी रखने के लिए प्रेरित करेंगे।

3. पहुंच में सुधार लाना

राज्य सरकारों और बीमा कंपनियों के सहयोग से भारत में प्रत्येक राज्य के लिए एक प्रमुख (लीड) बीमाकर्ता की पहचान करने में विनियामक का सक्रिय रुख बीमाकर्ताओं को सूक्ष्म स्तर पर सभी को बीमा प्रदान करने में सक्षम बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि हर राज्य में बीमाकर्ताओं की विशिष्ट जरूरतों और मांगों को लेकर बेहतर समझ बने और वे उनके हिसाब से कस्टमाइज्ड इंश्योरेंस सॉल्युशंस तैयार करें।

अगला मुकाम –वित्तीय तौर पर सुरक्षित भारत

टेक्नोलॉजी और परस्पर गठबंधनों का लाभ उठाते हुए इरडा ने न सिर्फ मौजूदा बीमा कंपनियों को प्रोत्साहित किया है बल्कि भारत में इंश्योरटैक को भी बढ़ावा दिया है। नियामक विकास स्तर पर कई बदलाव इंडस्ट्री के कारोबार और ग्राहकों के साथ व्यवहार के तरीके में बदलाव लाएगा। इससे बीमा उद्योग का भविष्य अधिक सुनहरा दिख रहा है।

इन सुधारों के परिप्रेक्ष्य में, बीमाकर्ताओं को बदलते विनियामक माहौल के अनुसार खुद को ढालने और तत्काल उसके मुताबिक प्रतिक्रियाएं करने के लिए तैयार रहना चाहिए। वर्ष 2047 तक सभी के लिये बीमा सुनिश्चित करने का लक्ष्य है ताकि प्रत्येक नागरिक के पास एक उपयुक्त जीवन, स्वास्थ्य और संपत्ति बीमा कवर हो तथा प्रत्येक उद्यम को उचित बीमा समाधान द्वारा समर्थित किया जा सके। इसका उद्देश्य भारतीय बीमा क्षेत्र को विश्व स्तर पर आकर्षक बनाना भी है। भारत में बीमा क्षेत्र में सुधार, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने, ग्राहक व्यवहार के साथ संरेखित करने, डेटा उपयोग को अनुकूलित करने, दावों के प्रबंधन को सरल बनाने, हाइब्रिड वितरण मॉडल को अपनाने तथा धोखाधड़ी से निपटने जैसे कई कदम उठाए जा सकते हैं।

- लागत को कम करने, दक्षता में सुधार एवं पारिस्थितिकी तंत्र के विकास का समर्थन करने के लिये मूल्य शृंखला में डिजिटलीकरण को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। इसमें कौशल कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों के कौशल और उत्पादकता बढ़ाने हेतु प्रौद्योगिकी का उपयोग करना शामिल है।
- बीमाकर्त्ताओं को ग्राहक व्यवहार और वरीयताओं में गतिशील परिवर्तनों के साथ संरेखित करने की आवश्यकता है। त्वरित व्यक्तिगत उत्पादों की पेशकश करके तथा बड़े पैमाने पर पेशकशों को लेकर लचीलेपन को प्राथमिकता देकर, बीमाकर्त्ता ग्राहकों की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से पूरा कर सकते हैं।
- भारत के लिए अगला प्रमुख मुकाम है वित्तीय रूप से सुरक्षित समाज तैयार करना और इसे साकार करने में बीमा उद्योग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

उषा
शाखा प्रबंधक
नुंगम्बाक्कम शाखा
चेन्नई अंचल

एक दर्द, जिसकी दवा आजतक नहीं मिल पायी

दिसंबर के पहले हफ्ते की शाम और रात भोपाल में अमूमन बहुत ठंडी नहीं होती, बस ऐसी होती है कि आप न तो रज़ाई ओढ़ सकते हैं और न ही चद्दर से काम चला सकते हैं। उस साल भी रात कुछ ऐसी ही थी लेकिन ठण्ड सामान्य से थोड़ा ज्यादा थी। जे पी नगर और आस पास के निवासियों के लिए भी वह एक जाड़े की सामान्य सी रात ही थी। लेकिन वहां और भोपाल के निवासियों को सपने में भी अंदेशा नहीं था कि आज के बाद यह रात इतिहास में एक ऐसी काली रात के रूप में दर्ज हो जाएगी, जिसे आने वाली पीढ़ियां कभी भूल नहीं पाएंगी।

3 दिसंबर 1984 की 'सुबह', अपने साथ एक ऐसी भयावह परिस्थिति लाएगी, अगर इसका अंदेशा भोपाल के लोगों को होता, तो शायद वे अपने कलेंडर से इस तारीख को पहले ही मिटा चुके होते। लेकिन समय पर किसी का वश नहीं चलता। 2 दिसंबर को क़ाज़ी कैम्प और जे पी नगर (आज का आरिफ़ नगर) और उसके आसपास के इलाके के लोग रात का भोजन करके सो गए। घरों में सोये पुरुषों और महिलाओं ने अगली सुबह के बारे में कुछ योजनाएं बनायीं होंगी और पता नहीं कितने युवक और युवतियों ने अपने प्रेम की कुछ बातों के लिए अगले दिन को चुना होगा। बच्चे रविवार होने की वजह से रोज से कुछ ज्यादा ही खेलकूद कर थके होंगे और उनकी माताओं ने उनको किसी तरह खिला-पिला कर सुलाया होगा, यह कहकर कि कल फिर खेल लेना। कुछ युवाओं और युवतियों के लिए आने वाला सोमवार (3 दिसंबर) रोजगार के कुछ अवसर प्रदान करने वाला रहा होगा। कुछ को उस दिन साक्षात्कार देना रहा होगा, जिससे कि वे अपने बुजुर्ग माता-पिता और परिवार के लिए सहारा बन सकें। कुछ घरों में मेहमान भी उसी रात आये थे और उन घरवालों को भी यह भान नहीं रहा होगा कि यह मेहमान अब वापस नहीं जा पायेगा। उस इलाके में कुछ शादियां भी उस दरम्यानी रात को हो रही थीं और कुछ नवविवाहित भी प्रथम मिलन की आस लिए दुनिया से कूच कर गए।

आधी रात के बाद जब पुराना भोपाल, चंद पुलिसवालों, चौकीदारों और बीमारी से खांसते खंखारते बुजुर्गों को छोड़कर गहरी मीठी नींद में सोया हुआ था, तो किसी को खबर भी नहीं थी कि आरिफ नगर की यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री उनके लिए जीने का नहीं बल्कि मरने का सबब बन जायेगी। उस फैक्ट्री में मौजूद तमाम गैस के टैंकों के नंबर भले ही उस समय के कुछ कर्मचारियों और कंपनी के अधिकारियों को याद रहे हों लेकिन आगे चलकर टैंक नंबर इ-610 इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया और भोपाल के लोग चाहकर भी इस नंबर को भूल नहीं पाएंगे। यह वही दुर्भाग्यशाली टैंक था जिससे गैस लीक हुई थी।

चाहे दुनिया की कोई भी कंपनी हो और वह लोगों के भलाई की कितनी ही बात करे, उसके लिए कहीं भी अपनी फैक्ट्री लगाने के पीछे सबसे अहम कारण वहां से मिलने वाला मुनाफा ही होता है। यह बात हर देश में भी लागू होती है, चाहे वह विकसित हो या विकासशील हो। बस विकसित देशों में इंसान की जिंदगी को अधिक तवज्जो दी जाती है और ऐसे कारखाने जो इंसानों या समाज के लिए खतरनाक होते हैं,

उनको आबादी से दूर बनाया जाता है। भोपाल में भी यूनियन कार्बाइड ने जब अपनी फैक्ट्री क़ाज़ी कैम्प के पास 1969 में शुरू की थी, तब भी यह जगह आबादी के बीच में ही थी, फ़र्क़ बस इतना था कि हिन्दुस्तान विकासशील देश था और यहाँ पर इंसानों की जिंदगी की कीमत कुछ खास नहीं थी। वैसे भी यूनियन कार्बाइड वहां पर कीटनाशक दवाएं बना रही थी, बस गलती से इंसान भी कीट-पतंगों की मानिंद उस हादसे में मारे गए। इस देश में पैसे के बल पर कहीं भी कुछ भी किया जा सकता है और प्रशासन ऐसे उद्योगपतियों के क़दमों में अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तत्पर था, बशर्ते उनको मुंहमांगी कीमत मिल जाए।

ऐसा नहीं है कि किसी को इसका अंदेशा नहीं था, उस दुर्भाग्यपूर्ण रात के पहले भी कई बार छोटे मोटे हादसे उस कारखाने में हो चुके थे। गैस लीक की छोटी मोटी घटनाएं हुई थीं, एकाध मजदूर उसमें मारे भी गए थे। अख़बारों में यूनियन कार्बाइड कारखाने की जगह पर कई बार सवाल खड़े किये जा चुके थे लेकिन न तो किसी को फ़र्क़ पड़ना था और न पड़ा। कारखाना अपनी गति से चलता रहा और शायद अगले कई सालों तक ऐसे ही चलता रहता, अगर उस रात वह हादसा नहीं हुआ होता। सुरक्षा के मानकों को दरकिनार करके मुनाफा बढ़ाने की प्रवृत्ति के चलते कारखाने में कभी भी कोई दुर्घटना घट सकती थी लेकिन किसी का भी ध्यान उसकी तरफ नहीं था। सन 1979 में मिथाइल आइसोसाइनाइट के उत्पादन के लिये नया कारखाना खोला गया और पांच साल बाद ही वह एक ऐसी भयावह त्रासदी भोपाल के लोगों को देकर गया जिसे इतिहास में सबसे बड़ी औद्योगिक त्रासदी माना जाता है।

आज सन 2018 में, त्रासदी के 34 साल बाद भी जे पी नगर, आरिफ नगर और आस पास के मोहल्लों में लोग उस दिन को याद करके सिहर जाते हैं। उस त्रासदी से बच निकले कुछ लोगों से बातचीत हुई और उन्होंने जो विवरण दिया, उसे सुनकर दिल दहल जाता है। श्री संजय मिश्रा जो आज एक सफल व्यवसायी हैं, उस समय लगभग 16 साल के युवा थे और उस दरम्यानी रात को घोड़ा नक्कास के अपने घर में परिवार के साथ सोये हुए थे। रात में गैस ने जैसे जैसे अपना असर बहती हवा के साथ फैलाना शुरू किया, उनके इलाके में भी शोर मचने लगा। जो लोग खुले में थे या बाहर सो रहे थे, उनको घबराहट, बेचैनी और सांस में रुकावट महसूस हो रही थी। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह किस वजह से हो रहा है और हर व्यक्ति परेशान हाल में दूसरों से कारण जानने की कोशिश कर रहा था। तभी कहीं से खबर आयी कि कार्बाइड कारखाने से जहरीली गैस लीक हो गयी है और यहाँ से भागने में ही भलाई है। उनके परिवार के सब लोग उठे, सबने जो कपड़ा मिला उसे अपने नाक और मुंह पर बाँधा और फिर वहां से लाल परेड मैदान की तरफ दौड़ लगायी। उनको याद भी नहीं है कि उन्होंने अपने घर में ताला बंद किया था या नहीं, बस जान बचाने के लिए पूरा परिवार भाग रहा था। रास्ते में उनको जगह जगह सड़क पर, गलियों में गिरे लोग और जानवर दिखाई पड़ रहे थे जो सांस लेने के लिए छटपटा रहे थे। भागते भागते उनका पूरा परिवार लाल परेड मैदान पहुंचा और उससे आगे जाने की उन लोगों में क्षमता नहीं बची थी। धीरे धीरे उनको महसूस हुआ कि वहां सांस लेने में ज्यादा दिक्कत नहीं हो रही थी और आँखों में जलन भी कम थी तो सारा परिवार वहीँ पूरी रात पड़ा रहा। कुछ ही देर में पूरा लाल परेड मैदान लोगों से भर गया, हर तरफ लोग कराह रहे थे, कुछ जिनका परिवार बिछड़ गया था, वह उनको याद करके रो पीट रहे थे। उन बिछड़े लोगों को यह एहसास हो गया था कि जो भी पीछे रह गया, वह शायद ही अब उनसे दुबारा मिल पायेगा। और उनकी आशंका निर्मूल नहीं थी, भले सरकारी आंकड़ों में 4000 से भी कम लोग मरे दिखाए गए हों, लेकिन स्थानीय लोगों की मानें तो 50000 से ज्यादा लोग उस हादसे में अगले कुछ दिनों में काल कलवित हो गए थे। विजय मिश्रा ने एक बात और बताई, उस रात ठण्ड और दिनों की अपेक्षा ज्यादा थी और इसी वजह से गैस ऊपर आसमान में नहीं जा पा रही थी। हलके पीले रंग की गैस की परत चारो

तरफ फैली हुई थी और इस वजह से भी बहुत ज्यादा लोग प्रभावित हुए और मौत के घाट उतर गए।

एक और प्रत्यक्षदर्शी की जुबानी उस रात का खौफनाक मंजर कुछ ऐसा था। श्री अमन शर्मा उस समय लगभग 24 वर्ष के युवक थे और अपने परिवार के साथ रेलवे कॉलोनी में रहते थे। उस रात किसी परिचित की शादी थी तो बारात से खा पीकर आने में रात के बारह बज गए और उसके बाद वह भी परिवार के साथ सो गए। पिताजी रेलवे में थे और उनकी रात की पाली नहीं थी, इसलिए वह भी घर पर ही थे। रात जब शोर मचना शुरू हुआ तो सब लोग जागकर बाहर आये। बाहर यूनियन कार्बाइड कारखाने से जहरीली गैस लीक होने की खबर मिली तो पूरा परिवार घर के दो स्कूटर से वहां से भागा। एक स्कूटर पर अमन अपने पिता और एक और सदस्य को लेकर मंडीदीप की तरफ भागे तो दूसरे स्कूटर पर उनके बड़े भाई अपनी माँ, बहन और अन्य सदस्यों को लेकर टी टी नगर की तरफ भागे। अमन बताते हैं कि मंडीद्वीप पहुँचते पहुँचते उनकी हालत स्कूटर चलाने जैसी नहीं रह गयी और वह एक दूकान के सामने स्कूटर लेकर लुढ़क गए। गैस लीक होने की खबर वहां भी पहुँच चुकी थी लेकिन वहां उसका असर बहुत कम था। वह आज भी वहां के दुकानदारों और मौजूद लोगों का आभार करना नहीं भूलते जिन्होंने उनको और इनके परिवार को झटपट घर के अंदर खींच लिया और पानी के साथ साथ बेनाड्रिल सिरप पिलाने लगे। कुछ देर में उन लोगों को राहत मिली और उनको लग गया कि फिलहाल मौत का साया उनके सर से हट गया है। बस एक अफ़सोस उनको आज भी है कि भागने के दरम्यान जब वह स्कूटर से पुल पार कर रहे थे तो कुछ लोगों के हाथ या पैर के ऊपर से उनका स्कूटर गुजर गया था।

अमन के बड़े भाई टी टी नगर पहुँचते पहुँचते बेदम होने लगे और वह भी सड़क के किनारे फुटपाथ पर गिर पड़े। इस तरफ भी गैस का असर कम था और वहां मौजूद लोगों ने उन लोगों को अपने घर में पनाह दे दी। और इस तरह उनका पूरा परिवार इस हादसे से बाल बाल बच गया, ये दीगर बात है कि उनकी माँ को सांस लेने में तकलीफ उसके बाद आजीवन रही। एक और बात उन्होंने बताया कि इस हादसे के बाद रेलवे स्टेशन या आस पास भिखारी अगले कुछ महीनों तक दिखाई नहीं दिए, जितने थे वह सब इस गैस काण्ड के चपेट में आकर मौत के घाट उतर गए थे।

वैसे तो कोई भी दुर्घटना अपने पीछे बहुत सारा दर्द और तकलीफ छोड़ जाती है और भोपाल गैस त्रासदी तो इतिहास की सबसे भीषण त्रासदियों में से एक थी। अधिकांश लोगों को इसके चलते बहुत आर्थिक क्षति उठानी पड़ी। कुछ लोगों को इससे निजी फायदा भी हुआ था। गैस काण्ड के अगले दिन एक स्थानीय नेता लोगों का हुजूम लेकर यूनियन कार्बाइड की तरफ बढे, उन्होंने लोगों को उनका हक़ दिलाने की भी बात की। लेकिन उसी दरम्यान एक अफवाह बहुत तेजी से फ़ैल गयी कि यूनियन कार्बाइड कारखाने में आग लगा दी गयी है और अब जहरीली गैस का बहुत ज्यादा असर फैलने वाला है। इससे उस पूरे इलाके में भगदड़ मच गयी और इसके बाद खूब जमकर घरों और दुकानों को उपद्रवियों द्वारा लूटा गया। उस राजनेता की राजनीति की दुकान इसके बाद चल निकली।

रेलवे के दो अधिकारियों का किस्सा भी लोगों ने बताया। एक अधिकारी जो शराब पीने के लिए बहुत बदनाम थे, वह घर पर शराब पीकर सो रहे थे। जब चारो तरफ हल्ला मचा तो वह भी घर से बाहर निकले और चारो तरफ घूम घूम कर लोगों से पूछने लगे। इसी दरम्यान शायद गैस की वजह से या किसी और वजह से वह गिर पड़े और जब तक उनको घर ले जाया जाता, उनकी मौत हो गयी। लेकिन घरवालों ने उनको ले जाकर उनके ऑफिस में बैठा दिया और बाद में उनकी मौत को ड्यूटी पर हुई मौत बताया गया। लड़के को भी नौकरी मिल गयी और मौत का मुआवजा अलग से मिला। दूसरे अधिकारी उस समय ड्यूटी पर ही थे और उनको भी खबर लग गयी थी कि गैस त्रासदी हो गई है। लेकिन उन्होंने अपनी ड्यूटी नहीं छोड़ी और स्टेशन पर मौजूद लोगों की सलामती

के लिए लगे रहे। उसका नतीजा उनको आगे भुगतना पड़ा, उनकी पत्नी और बेटी दोनों गैस के चलते अगले दो दिनों में दुनिया में नहीं रहे। बेटा बाहर था तो वह बच गया लेकिन कुछ सालों बाद वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठे। आज भी वह भोपाल रेलवे स्टेशन पर पागलपन की अवस्था में घूमते हुए दिखाई पड़ते हैं। मेरी भी मुलाकात उनसे एक बार स्टेशन पर ही हुई थी और उनसे जुड़े किस्से के बारे में मुझे बाद में पता चला।

तमाम अखबार, पत्रिकाएं और सरकारी अमला इस बात की तस्दीक़ करते हैं कि उस कांड का असर आज भी मौजूद है। बहुत से बच्चे आज भी अपंग या मानसिक रूप से कमजोर पैदा हो रहे हैं और पिछले 34 वर्षों में कितने ही लोगों ने धीरे-धीरे कैंसर, अस्थमा और श्वास जैसे रोगों से अपनी जान गँवा दी है। लोगों को मुआवजा तो मिला है लेकिन उतना नहीं जितना मिलना चाहिए था। जिन लोगों को इस हादसे में उनसे छीन लिया है, उनका दर्द तो कभी भर ही नहीं सकता। आज यूनियन कार्बाइड का कारखाना उजाड़ पड़ा है लेकिन जहरीले पदार्थों का अवशेष अब भी वहीं मौजूद है। हमें जरुरत है इस हादसे से सबक लेने की, ताकि भविष्य में कोई और गैस काण्ड या ऐसी ही कोई अन्य त्रासदी न हो।

विनय कुमार सिंह
आंचलिक प्रबंधक
गुवाहाटी अंचल

लाठी - बुढ़ापे का साथी

विडंबना है - जब किसी को अपने परिवारजनों और कुटुम्बों की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, उम्र के उस मोड़ पर अधिकतर लोग अपने आप को अकेला पाते हैं।

बेटा पढ़-लिख विदेश चला गया। बेटी की शादी हो गई और अब वह अपने ससुराल रहती है। बंद दीवारें और पुरानी यादों का समूह कुछ पल तो तसल्ली देती है लेकिन नीरवता और एकाकीपन, सहसा मानो समझाती है कि सपने देखना बंद करो। चाय की चुस्कियाँ कुछ देर के लिए सघन चुप्पी को तोड़ती हैं लेकिन दोनों के बीच का संवाद सिर्फ आँखो और पुतलियों तक ही सीमित रह जाता है।

कभी एक फोन कॉल आया और मन हर्षित हो उठा। उबार आया तो कहा चलो पार्क चलते हैं। पोते ने इंजीनियरिंग की परीक्षा पास कर ली, पड़ोसियों के लिए मिठाई तो बनती है! बगल से मुस्कुरायी, ठीक है - लाओ झोला। झोला लिया और चला तो पैर डगमगाया।

बोली-अरे कितने स्वार्थी हो तुम। एक छोटी मी खुशी में जीवन के सबसे भरोसेमंद साथी यानि लाठी भूल गए। माना गलती हो गई है। लेकिन, ये लाठी भी तो देखो, कितनी निष्ठुर है, भूलने नहीं देती। देखो ! कितनी कुटिल भाव दिखा रही है - कुबड़ी कहीं की।

ओम प्रकाश चौधरी
आंचलिक प्रबंधक
पटना अंचल

AI : Friend & Foe

Artificial Intelligence (AI) is one of the most exciting and debated topics today. It's a technology that lets machines think and act a bit like humans—recognizing pictures, writing stories, or guessing what might happen next based on data. But is AI a gift that makes life better, or a problem that could cause trouble? It's both, depending on how we use it. AI can make things faster and easier, but it also brings challenges like job losses, ethical dilemmas, and high costs. In this summary, we'll explore AI's history, its benefits, its downsides, and what it means for our future—all in simple terms, with some wise words from famous people to guide us.

A Quick Look at AI's History

AI isn't brand new—it started way back in the 1950s, thanks to two brilliant minds: Alan Turing and John McCarthy. Turing, a math genius, wondered if machines could think like people. McCarthy, a computer scientist, gave AI its name and helped make it real. By the 1970s, projects like DARPA's street mapping laid the groundwork for tools we use today, like Google Maps. Over the decades, AI grew from a wild idea into something we see everywhere—on our phones, in chatbots, and even in space exploration. It's now a big part of our lives, but with that power comes a mix of good and bad.

The Bright Side of AI

AI has a lot of amazing benefits. It's like a super-smart helper that can do boring or tricky jobs so people don't have to. Here's how it makes life better:

Speeding Things Up: AI can automate tasks, like answering customer questions with chatbots or sorting through tons of data. This saves time and lets people focus on more interesting work.

Helping in Big Ways: In healthcare, AI spots diseases early by studying patterns, which can save lives. In banks, it catches fraud fast. In stores, it predicts what customers want, making shopping smoother.

Making Life Safer and Easier: AI cuts down on human mistakes, runs 24/7, and even helps in dangerous places—like factories or battlefields—so people stay out of harm's way.

Boosting Creativity and Decisions: It helps businesses plan better with predictions and gives us cool tools like virtual assistants (think Siri or Alexa).

Bill Gates once said, "The machines will do a lot of jobs for us and not be super intelligent. That should be positive if we manage it well." He's right—AI can take the heavy lifting off our shoulders, letting us focus on what matters. From driverless cars to smarter hospitals, AI's potential to improve our world is huge.

The Dark Side of AI

But AI isn't perfect. It has some serious downsides we can't ignore. Here's what's tricky about it:

It Costs a Lot: Building AI takes money—lots of it. You need fancy tech and smart people to run it, which small companies might not afford.

No Heart or Imagination: AI can't feel emotions or come up with totally new ideas like humans can. It's great at following rules, but not at thinking

outside the box.

It Wears Out: Machines break down over time, and AI can get old if it's not updated. Without care, it stops working well.

Job Worries: AI can do repetitive jobs—like factory work or data entry—so well that people might lose those jobs. That's tough for workers and the economy.

Ethical Messes: AI can invade privacy, trick people with fake videos, or make unfair decisions if it's not programmed right. It's even used in crimes, like making fake images or voices to scam people.

Too Much Reliance: If we lean on AI too much, we might get lazy or forget how to do things ourselves. Imagine if it fails—what then?

Elon Musk has warned, "AI is a fundamental risk to the existence of human civilization." He's talking about big dangers, like AI in weapons or out-of-control systems. It's a scary thought, and it shows why we need to be careful.

Real-Life Examples

AI is already changing things, for better and worse:

Healthcare: AI can predict illnesses and speed up research, but it might miss the human touch doctors bring.

Transportation: Self-driving cars could cut accidents, but if they glitch, who's to blame?

Shopping: AI makes online buying personal, but it also tracks everything we do, raising privacy flags.

Warfare: AI-powered drones could save soldiers' lives, but they could also start an arms race no one can stop.

Stephen Hawking summed it up perfectly: "The development of full artificial intelligence could spell the end of the human race. But it could also be the best thing that ever happened to us." It's a double-edged sword—we get the good with the risky.

What's Next for AI?

The future of AI is exciting but uncertain. In healthcare, it could mean custom treatments without long waits. In transportation, more driverless vehicles could make roads safer. In stores, AI might run warehouses and guess what we'll buy next. But there's a flip side: jobs might disappear, people might feel more alone, and biases in AI could hurt fairness. If AI gets super smart—maybe even self-aware—it could help us daily but also slip beyond our control. The big question is: will AI become "you"? Will it replace human smarts? Some worry we're losing our natural skills by relying on it too much. Clicking for answers is easy, but it might dull our brains over time. Still, AI's not good or bad on its own — it's a tool we shape.

Finding Balance

So, is AI a Friend or a Foe? It's both. It can revolutionize our lives—making them easier, safer, and more productive—but only if we handle it right. We need rules to keep it safe, like laws for privacy and limits on dangerous uses. We also need to train people to work with AI, not just let it take over. Ethical development is key: AI should help everyone, not just a few, and not harm anyone along the way. Bill Gates added a hopeful note: "I am in the camp that is concerned about super intelligence... A few decades after that though the intelligence is strong enough to be a concern." He sees the promise and the peril, urging us to plan ahead. With care, AI can spark creativity and growth. Without it, we risk losing control.

Rajkumar Pamnani
Retd. Chief Manager
Bank of India

Trade Wars and Its Effect on Global Economy

"You See these empty, old, beautiful steel mills and factories that are empty and falling down. We're going to bring the companies back. We're going to lower taxes for companies that are going to make their products in the USA. And We're going to protect those companies with strong tariff's" ~ Donald Trump

Having agreement in economic issue is a herculean task. But if international trade structured properly is generally agreeable as it benefits all parties. And any barrier of international trade tends to shrink shared economic pie. However, trade barriers—including tariffs, subsidies, import quotas, currency devaluation, and other protectionist policies—are common among nations. Sometimes a protectionist policy (what 18th-century economist Adam Smith called a "beggar-thy-neighbour" policy) leads to trade war. It is an outcome of protectionism, tariffs or other trade barriers against each other. Sometime tariffs as exclusive mechanism are known as customs wars, toll wars, or tariff wars; as a reprisal, the latter state may also increase the tariffs.

Nations interest may be beneficial in the short term, might be detrimental over the long term, and vice versa. Few occasion a nation will put its own interest first, especially during a period of recession, war, or civil unrest. However, noneconomic considerations such as national security or to protect trade secrets also a major reason. In few cases a nation's leadership promotes a trade policy that benefits certain political insiders, despite the aggregate cost. It is important to understand the long-term effect of trade wars in a dynamic world. It effects on geopolitical dynamics, technological innovation, and strategic decisions for multinational companies.

Major Historic trade conflicts

- 1815–1846: Corn Laws by Britain.
- 1890: The McKinley tariff. by U.S.A.
- 1930: Smoot-Hawley Tariff Act. By U.S.A.
- 1973: Arab oil embargo.
- 2018–present: U.S.–China trade war. A series of escalating tariffs disrupted supply chains.
- Emerging tech restrictions. New export controls on semiconductors and artificial intelligence (AI) underscore the growing role of geopolitics in trade.

Mechanism of the trade war

a) **Tariffs :** Countries impose tariffs (taxes) on imported goods. The U.S. has imposed tariffs on Chinese electronics, and China has responded with tariffs on U.S. soybeans and other agricultural products.

b) **Currency devaluation :** Nations want to make exports cheaper and imports more expensive. It is used to counteract tariffs by keeping goods competitively priced. In 2019, China was accused of devaluing its yuan to offset U.S. tariffs.

c) **Other trade barriers :** Nations use quotas to limit imports, subsidies to support domestic industries, and regulations to block foreign competition. European Union's agricultural subsidies that protect local farmers is a good Example. These barriers are less obvious than tariffs, but can be just as disruptive and may further inflame trade tensions.

D) Embargoes and export restrictions : Embargoes,

such as the 1973 Arab oil embargo that stopped shipments to the U.S. and several other Western nations, halt trade with certain countries to achieve political aims. Export restrictions, meanwhile, limit the sale of critical goods such as technology or raw materials.

How trade barriers turn into a trade war?

Case a) Suppose World economy booming and Consider two Nations, Nation X and Nation Y. Now, Nation X believes it's a good time to have its mobile manufacturing industry. Nation X restrict mobile imports temporarily, even though it mean more expensive mobile for its consumers of Nation X in short term, and will likely mobile industry in Nation Y. As both Nations overall economy is booming, neither nation feels the pinch.

Case b) Now suppose, the policy of Nation X has worked so well that Nation X is able to begin exporting its mobiles to Nation Y. At this point, the nations have a choice:

b1) Negotiate a trade agreement. Nation X may be allowed to export mobile to Nation Y, but Nation X must drop its import restrictions on mobile made in Nation Y. Or it may ask Nation Y to agree to import more agricultural products, textiles, automobiles or other goods that Nation X may produce in abundance.

b2) Begin a trade war. Nation Y could add a 25% tariff on mobile made in Nation X. And Nation X might respond by suppressing the value of its currency relative to that of Nation Y by 25%, thereby keeping its exported mobile competitively priced in Nation Y's consumer market. So Nation Y could raise its tariff, or add trade barriers in other areas of the economy.

c) In extreme cases, a trade war can elicit a military response. For example, many economists and historians point to the **Smoot-Hawley Tariff,** which raised import duties to protect American farmers and businesses in the early days of the Great Depression, as not only exacerbating the global economic meltdown, but also contributing to the rise in extremism that culminated in World War II.

The broader effect of trade wars

Global trade and global economic relationship is based on economic agreements and get deeply affected by trade wars and tariff policies. The word dynamics reshaped in ways extending far beyond immediate fiscal impacts. Even when initiated for protectionist reasons or to set trade imbalances right, the consequences can be all-pervasive and long-term. It includes disruption of global supply chains and it will reconsider the sourcing and manufacturing strategy of firms including increasing costs and reducing efficiency. Further, companies may need to find new suppliers or switch production to different locations only to avoid tariffs. Trade war have lasting and profound effects on global trade patterns as well as economic integration. Further, Financial Markets and Stock prices of concerned sectors brings huge volatility since it would remain unknown when tariffs would be imposed and what kind of trade policy would be adopted. Ultimately, it may make investments unattractive. Generally, the impact of trade wars and tariff policies itself underlines how integrated the modern global economy has become.

"Free trade or the free market means the sovereignty of the consumer" - Faustino Ballve

It can be learned from history that although nations must protect their interests, long-term economic stability and growth are best achieved through cooperation and open markets. Trade restrictions might address short-term goals, but when they escalate into trade wars, the economic pie tends to shrink for everyone involved i.e. leaving no true winners.

Barun Kumar
Chief Manager
Siliguri Zone

कमला जी की फिक्स्ड डिपॉजिट

मुझे वो दिन आज भी अच्छे से याद है: गर्मियों का मौसम था, और मेरी बैंक परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। ''बधाई हो, आपको बैंक ऑफ़ इंडिया में लिपिक के पद पर चयनित किया जाता है।'' कुछ ऐसी ही थी उस परिणाम की आखरी पंक्ति। 21 साल की उम्र में बैंक में एक पद हासिल कर पाना, मेरे लिए एक सपना सच हो जाने वाली बात थी। मैं उत्सुक थी, इंतज़ार कर रही थी कि कब मुझे ब्रांच मिले और कब मैं जाकर वहाँ काम कर सकूँ। लेकिन न जाने क्यूँ मेरे दोस्त-रिश्तेदारों ने मुझे तरह-तरह की चेतावनी देना शुरू कर दिया। ''ग्राहक बहुत परेशान करेंगे'', ''समय से निकल आना'', ''कोई झगड़ा करे, तो तुम भी सामने से लड़ लेना, रोना मत'' इत्यादि। पहले तो मुझे लगा के यूं ही सभी इतना परेशान हो रहे हैं लेकिन अहमदाबाद जैसे बड़े शहर की बड़ी ब्रांच में कुछ ही दिन काम करके समझ आया कि उन चेतावनियों में कुछ तो सच्चाई ज़रूर थी।

आप चाहें कितने ही नौसिखिए क्यूँ न हो, बैंक आपको 'बैंकर' बना ही लेता है। धीरे-धीरे आप बैंकिंग प्रणाली के आदि हो ही जाते हैं। आपको यह समझ आने लगता है कि परिस्थितियों से कैसे निपटा जाए। तो मैं भी हँसी-ख़ुशी अपना काम सीखने लग गई। कुछ ही हफ़्ते काम करके मुझे कई तरह के ग्राहकों का अनुभव भी हुआ, अधिकतर ग्राहक शांति से अपना काम करवाते लेकिन कुछ हमेशा जल्दी में रहते, कुछ को हमेशा एक ही तरह के काम होते और कुछ हमेशा परेशान ही दिखते। उन्हें यह समझाना बहुत कठिन काम था कि कनेक्टिविटी का आना, या उनके खाते में पेंशन जमा न होना आदि हमारे नियंत्रण में नहीं है। इन्हीं दिनों में मेरी मुलाकात कमला जी से हुई।

ब्रांच की पासबुक मशीन, जो महीने में 7-8 दिन तो ख़राब रहती ही थी, उस दिन भी ख़राब थी। इसका मतलब एक ही था, मेरे काउंटर पर कभी न ख़त्म होने वाली लम्बी लाइन। मैंने बाहर से एक कॉफ़ी मंगवाई, और अपने आप को मानसिक साहस देकर अपना काम करने लगी। इसी दौरान एक बूढ़ी महिला मेरे सामने आ खड़ी हुई। उनकी नज़रे इधर-उधर घूम रही थीं, जैसे उन्हें पता न हो कि उन्हें कहाँ जाना है या किससे बात करनी है। आदतानुसार, मैंने उनसे पूछा, ''मैडम, आपको कुछ मदद चाहिए?'', यह सुनकर उनके माथे का तनाव थोड़ा कम हुआ। दिखने में वो कुछ 60-65 साल की लग रहीं थी, उन्होंने साधारण सी सूती साड़ी पहन रखी थी, और उनके सफ़ेद बालों में जूड़ा बना हुआ था।

''नमस्ते बेटा'', उन्होंने धीरे से कहा। ''मैं अपनी बचत के बारे में बात करने आई हूँ। मैं अपनी रिटायरमेंट की रकम को फिक्स्ड डिपॉजिट में लगाना चाहती हूँ।'' उनकी आवाज़ में शांति थी, लेकिन उनकी आँखों में हल्की चिंता भी दिख रही थी। मुझे महसूस हुआ कि वो थोड़ी घबराई हुई सी थी। उनकी साधारणता ने मुझे अपनी दादीजी की याद दिला दी। मेरी दादीजी भी अकेले बैंक में जाने से बहुत हिचकिचातीं है और हमेशा मम्मी या पापा को साथ ले जाती है, तो मैं समझ सकती हूँ कि वो महिला भी कुछ ऐसा ही महसूस कर रही होंगी।

मैंने कुछ ब्रोशर निकाले और उन्हें हमारे फिक्स्ड डिपॉजिट स्कीम्स के बारे में समझाने लगी। कमला जी ध्यान से सुन रही थीं, सिर हिला रही थीं, लेकिन मैं देख सकती थी कि वह अलग अलग स्कीम्स देखकर थोड़ी सी उलझन में थी। ''कमला जी'', मैंने धीरे से कहा, ''मुझे पता है कि ये सब थोड़ा मुश्किल लग सकता है। क्यों न हम इसे एक-एक स्टेप करके समझें, और मैं आपकी जरूरतों के हिसाब से सबसे बेस्ट ऑप्शन ढूंढने में आपकी मदद करती हूँ?'' फिर मैंने उनसे पूछा कि उनका एफ.डी. बनाने का उद्देश्य क्या है। ''बेटा, मैं चाहती हूँ कि ये पैसा सुरक्षित रूप से बढ़े। ये बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन ये मेरी पोती मीरा के लिए सब कुछ है। जानती हो? वो बड़ी होकर डॉक्टर बनना चाहती है। मैं चाहती हूँ कि उसका हर सपना पूरा हो। मुझे इन पैसों की ज़रूरत

करीब 5-6 सालों में पड़ेगी, जब वह आगे की पढ़ाई करने जाएगी, क्या ऐसा कोई तरीका है जिसमे मैं 5 साल तक अच्छे ब्याज पर इन पैसों को रख सकूँ?'', कमला जी ने मुझसे पूछा।

हमारे अपने, हमारे लिए कितना सोचते हैं, यह मुझे उस दिन समझ आया। अपने जीवन की पूरी कमाई को अपने बच्चों के लिए बचाना, ताकि उनके सपने पूरे हो पाएँ, और जब उनके हो जाए, तो उनके बच्चों के सपने पूरे करवाना। मीरा वाकई में एक खुशनसीब बच्ची है कि उसकी दादी उसके भविष्य के बारे में इतना सोच रही थीं। मैंने तुरंत उन्हें उनकी ज़रूरतों के हिसाब से ''बेस्ट प्लान'' समझाया जिससे उनके पैसे सुरक्षित तरीके से बढ़ पाएं।

''आप फॉर्म भर पाएंगी? अगर आपको दिक्कत हो तो आप मुझे बताना, मैं आपका फॉर्म भर दूंगी'', मैंने उनसे कहा। यह सुनकर वो झिझक कर बोलीं, ''बेटा, मैं स्कूल में टीचर थी, लेकिन हिंदी की, तो अंग्रेज़ी थोड़ी कमज़ोर है मेरी, तुम मदद कर दोगी?'' मैंने भी मुस्कुराते हुए उन्हें फॉर्म पकड़ा दिया, और दिखाया कि हमारे सारे फॉर्म स्थानीय भाषा, हिंदी और अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं में होते हैं। उन्होंने फॉर्म देखा और खुश होकर कहने लगी, ''चलो, अब तुम्हें और परेशान नहीं करुँगी, यह तो भरना आता है मुझे।''

इस बात को लगभग 6 महीने हो चुके हैं, लेकिन अब कमला जी बैंक में आने से हिचकिचातीं नहीं है। मैंने तो सिर्फ अपना काम ही किया था, लेकिन उन्हें अब मुझसे इतना लगाव है कि वो हर महीने बेझिझक मेरे सामने आ खड़ी होती हैं, कितनी ही भीड़ क्यूँ न हो, मेरा हाल पूछे बिना लौटती नहीं है, कभी कुछ फल, तो कभी घर के बने लड्डु, या कभी यूँही कुछ चॉकलेट्स दे जाती हैं। लेकिन जब-जब वो अपनी पोती मीरा को साथ लाती हैं, उससे मिलकर मैं हमेशा यही कहती हूँ कि, ''मीरा, तुम मन लगा कर पढ़ाई करो, हम सब तुम्हारे डॉक्टर बनने का इंतज़ार कर रहे हैं।''

कुमारी प्राची परमार
लिपिक, नारणपुरा-वाडज शाखा
अहमदाबाद अंचल

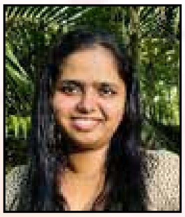

जीने की कला

मुस्कुरा के न जिया तो क्या जिया,
जो गमों में डूब के जिया तो क्या जिया,
ज़िंदगी, एक खूबसूरत तोहफा है कुदरत का,
इस तोहफे को न समझा तो क्या जिया।

धूप-छांव तो होगी सफर में,
जो हार के थम गया तो क्या हासिल किया,
कभी अकेले तो कभी हमसफर साथ होगा,
जो हर बार सहारे को तरसा तो क्या जिया।

जीवन के सफर की शुरुआत की थी अकेले,
जो कारवां जुड़ा सब सफर में जुड़ा,
जो खुद पे भरोसा न किया तो क्या जिया।

भविष्य की छोड़ वर्तमान में है जीना,
ये पल जो हाथ में है इसे खो दिया तो क्या किया,
वो सँवर जाएगा पल, जो आने वाला है,
अगर आज में जी लिया, तो जी लिया।

सिर्फ अपने लिए भी जिया, तो क्या जिया,
जो आ सके तू किसी के काम तो,
हुआ ये साकार तेरा जीवन,
ऐसा ही जीवन जब जिया तो समझ,
कि तूने भरपूर अपना जीवन जिया।

मोहित बडयाल
मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, नोएडा

गणतंत्र दिवस / Republic Day

अहमदाबाद अंचल

गांधीनगर अंचल

गया अंचल

गोवा अंचल

इंदौर अंचल

जबलपुर अंचल

जमशेदपुर अंचल

कानपुर अंचल

गणतंत्र दिवस / Republic Day

लखनऊ अंचल

लुधियाना अंचल

मुंबई दक्षिण अंचल

नासिक अंचल

पटना अंचल

प्रबंधन विकास संस्थान, बेलापुर

सीवान अंचल

सूरत अंचल

गणतंत्र दिवस / Republic Day

तिरुवनंतपुरम अंचल

एर्नाकुलम अंचल

वाराणसी अंचल

विदर्भ अंचल

शाखाओं में सुरक्षा समिति की बैठक

- सुरक्षा सभी की जिम्मेदारी है, इस बात का अहसास
- आपसी एकता, समझदारी से बात, संवेदनशीलता
- बैंक की छवि कभी न बिगड़े
- दोहरा नियंत्रण, सेक्युरिटी गैजेट्स की जानकारी
- पुलिस, प्रशासन, पड़ोसियों से मैत्रिपूर्ण व्यवहार
- फायर एक्स्टिंग्विशर का प्रयोग / जानकारी
- समस्या / संदेह की स्थिति में संपर्क और धीरज

लेफ्टिनेंट कमांडर शशांक केकरे
वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा)
प्रधान कार्यालय

डीपफेक: एक डिजिटल धोखा/सतर्कता

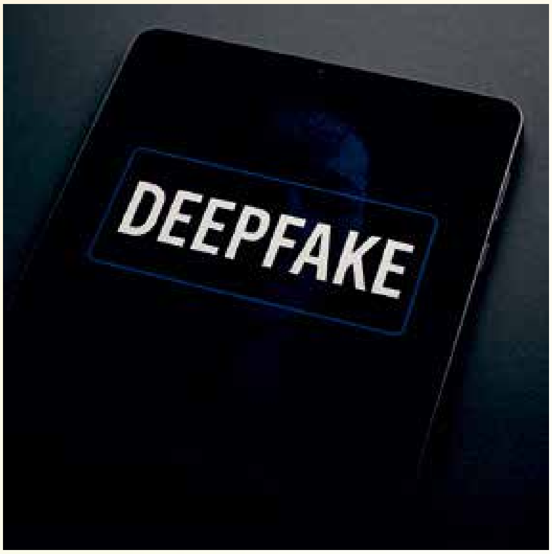

परिचय

डिजिटल तकनीकी विकास के इस युग में, डिजिटल माध्यमों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इसी के साथ, तकनीकी उन्नति ने हमारे जीवन में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, वहीं दूसरी ओर इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी उभरकर सामने आए हैं। ऐसा ही एक नकारात्मक पहलू है ''डीपफेक''। यह तकनीक न केवल मनोरंजन और मीडिया के क्षेत्र में, बल्कि हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भी गंभीर समस्याएं पैदा कर सकती है। डिजिटल दुनिया में, जहां हर चीज़ की नकल संभव है, वहाँ डीपफेक एक खतरनाक हथियार बन गया है। यह तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के ज़रिये, वीडियो और ऑडियो को इतनी यथार्थता से संपादित करती है कि असली और नकली में अंतर करना मुश्किल हो जाता है। इसका इस्तेमाल राजनीतिक प्रचार से लेकर बदनामी फैलाने तक, कई नकारात्मक कामों में किया जा रहा है।

''हर चेहरा यहां हकीकत का आईना नहीं,
जो दिखता है, वो सच का आशियाना नहीं।''

डीपफेक क्या है ?

डीपफेक (Deep fake) एक तकनीक है, जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) का उपयोग करके वीडियो, ऑडियो, या इमेज को इस तरह से संशोधित करती है कि वे वास्तविक दिखाई दें। इस तकनीक में किसी व्यक्ति के चेहरे या आवाज़ को दूसरे व्यक्ति के चेहरे या आवाज़ के साथ बदल दिया जाता है। इसका उपयोग किसी भी व्यक्ति के बोलने, कुछ कहने या करने की वीडियो बनाने के लिए किया जा सकता है, जो वास्तव में उस व्यक्ति ने कभी नहीं कहा या किया हो।

डीपफेक के खतरनाक पहलू

1. झूठी जानकारी और अफवाहें:

डीपफेक तकनीक का सबसे बड़ा खतरा यह है कि इसके माध्यम से झूठी जानकारी और अफवाहें फैलाना बहुत आसान हो जाता है। यह तकनीक किसी भी व्यक्ति की छवि को नष्ट कर सकती है और समाज में अव्यवस्था फैला सकती है।

2. राजनीतिक और सामाजिक अस्थिरता:

आजकल के चुनावी महोल में डीपफेक का उपयोग करके राजनीतिक नेताओं या सामाजिक हस्तियों के गलत बयान या कार्य दिखाए जा सकते हैं, जिससे राजनीतिक और सामाजिक अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है।

3. व्यक्तिगत हानि:

डीपफेक का उपयोग व्यक्तिगत दुश्मनी निकालने के लिए भी किया जा सकता है। किसी व्यक्ति की फर्जी वीडियो बनाकर उसे बदनाम करना या ब्लैकमेल करना संभव हो गया है।

4. बदनामी और उत्पीड़न: निजी वीडियो को संपादित करके और झूठे दृश्य जोड़कर किसी व्यक्ति की बदनामी की जा सकती है। इससे उस व्यक्ति के सामाजिक और व्यावसायिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। यौन उत्पीड़न के मामलों में भी डीपफेक का इस्तेमाल हो रहा है।

डीपफेक कैसे काम करता है

डीपफेक तकनीक मुख्यतः आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) का उपयोग करके बनाई जाती है। इसका आधार न्यूरल नेटवर्क्स और डीप लर्निंग एल्गोरिदम पर आधारित है। आइए, इसे विस्तार से समझते हैं:

1. डेटा संग्रह और प्रशिक्षण:-

सबसे पहले, डीपफेक बनाने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है। इसमें उस व्यक्ति की तस्वीरें, वीडियो और ऑडियो क्लिप शामिल होते हैं, जिसका नकली वीडियो या ऑडियो बनाना है। इस डेटा को इकट्ठा करके मॉडल को प्रशिक्षित किया जाता है।

2. न्यूरल नेटवर्क्स और डीप लर्निंग:-

डीपफेक बनाने के लिए गहरे न्यूरल नेटवर्क्स का उपयोग किया जाता है, जो मानव मस्तिष्क के कार्य करने के तरीके की नकल करते हैं। ये नेटवर्क्स कई स्तरों पर डेटा का विश्लेषण और प्रोसेसिंग करते हैं। डीप लर्निंग मॉडल, विशेष रूप से जनरेटिव एडवर्सरियल नेटवर्क्स (GANs), इस प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

जनरेटिव एडवर्सरियल नेटवर्क्स (GANs) क्या करते है

GANs दो मुख्य घटकों से मिलकर बने होते हैं:

1. जनरेटर: यह नकली डेटा उत्पन्न करता है।

2. डिस्क्रिमिनेटर: यह वास्तविक और नकली डेटा के बीच अंतर करने की कोशिश करता है।

जनरेटर और डिस्क्रिमिनेटर एक दूसरे के खिलाफ काम करते हैं। जनरेटर जितना अधिक वास्तविक दिखने वाला नकली डेटा उत्पन्न करता है, डिस्क्रिमिनेटर उतना ही बेहतर नकली और वास्तविक डेटा में अंतर करने की कोशिश करता है। इस प्रतिस्पर्धा के चलते जनरेटर धीरे-धीरे बहुत उच्च गुणवत्ता का नकली डेटा उत्पन्न करने में सक्षम हो जाता है।

3. फेशियल रिकग्निशन और रीएनैक्टमेंट

डीपफेक में मुख्य रूप से फेशियल रिकग्निशन और रीएनैक्टमेंट तकनीकों का उपयोग होता है:

(i) फेशियल रिकग्निशन: इसके तहत, लक्ष्य व्यक्ति के चेहरे के भाव, विशेषताएं और हावभाव को पहचानने और कैप्चर करने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग किया जाता है।

(ii) रीएनैक्टमेंट: इसमें किसी दूसरे व्यक्ति के चेहरे के हावभाव और भाषण को लक्ष्य व्यक्ति के चेहरे पर लागू किया जाता है। इसका मतलब है कि लक्ष्य व्यक्ति की नकली वीडियो में असली व्यक्ति के हावभाव और आवाज का प्रयोग किया जाता है।

4. पोस्ट-प्रोसेसिंग

डीपफेक वीडियो के निर्माण के बाद, इसे और अधिक वास्तविक दिखाने के लिए पोस्ट-प्रोसेसिंग तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इसमें रंग सुधार, प्रकाश समायोजन, और अन्य विजुअल इफेक्ट्स शामिल होते हैं ताकि नकली वीडियो और अधिक वास्तविक लगे।

डीपफेक की पहचान के लिए तकनीकी उपाय:-

1. डीपफेक डिटेक्शन टूल्स और सॉफ़्टवेयर:

कई कंपनियां और शोध संगठन डीपफेक पहचानने वाले उपकरण और सॉफ़्टवेयर विकसित कर रहे हैं। ये उपकरण वीडियो के पिक्सल, फ्रेम, और ऑडियो के विश्लेषण के आधार पर नकली और वास्तविक वीडियो के बीच अंतर कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, माइक्रोसॉफ्ट ने विडियो ऑथेंटिसिटी डिटेक्शन टूल विकसित किया है जो डीपफेक वीडियो की पहचान कर सकता है।

2. बायोमेट्रिक एनालिसिस:

बायोमेट्रिक तकनीक जैसे चेहरे के सूक्ष्म भाव, आँखों की झपक, और त्वचा की बनावट का विश्लेषण करके डीपफेक की पहचान की जा सकती है। ये संकेतक सामान्यत: डीपफेक वीडियो में सटीक रूप से नहीं दोहराए जा सकते।

3. फोरेंसिक सिग्नल एनालिसिस:

डिजिटल फोरेंसिक विश्लेषण के माध्यम से वीडियो में असंगतियों और अनियमितताओं की जांच की जा सकती है। यह विश्लेषण वीडियो की मेटाडेटा और अन्य डिजिटल सिग्नल्स पर आधारित होता है।

डीपफेक और पोर्न: समाज की बदलती तस्वीर

डीपफेक तकनीक और पोर्नोग्राफी के संयोजन ने डिजिटल युग में गंभीर सामाजिक और नैतिक चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। डीपफेक पोर्न, जिसमें किसी व्यक्ति के चेहरे को अश्लील वीडियो में जोड़ा जाता है, व्यक्तिगत निजता, सामाजिक मानदंडों और नैतिकता पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है। इस लेख में हम डीपफेक और पोर्नोग्राफी के समाज पर पड़ने वाले प्रभावों और इससे उत्पन्न होने वाले खतरों पर चर्चा करेंगे।

निजता का उल्लंघन:

डीपफेक पोर्न किसी व्यक्ति की निजता का गंभीर उल्लंघन है। बिना उनकी अनुमति के किसी के चेहरे का उपयोग करना और उसे अश्लील वीडियो में दिखाना न केवल अनैतिक है, बल्कि कानूनी रूप से भी अपराध है।

रोकथाम और समाधान

1. तकनीकी उपाय:

डीपफेक पहचानने वाले टूल्स और सॉफ़्टवेयर विकसित किए जा रहे हैं, जो नकली वीडियो की पहचान कर सकते हैं।

सोशल मीडिया और वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म्स को इन टूल्स का उपयोग करके डीपफेक पोर्न को हटाने और रोकने के उपाय करने चाहिए।

2. शिक्षा और जागरूकता:

लोगों को डीपफेक पोर्न के खतरों और इसके प्रभावों के बारे में जागरूक करना आवश्यक है। इसके लिए जागरूकता अभियान, कार्यशालाएं और ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

डीपफेक के फायदे

डीपफेक तकनीक को अक्सर उसके दुरुपयोग के कारण बदनाम किया जाता है, लेकिन इस तकनीक के कई सकारात्मक उपयोग भी हो सकते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख फायदे दिए जा रहे हैं:

1. फिल्म और मनोरंजन उद्योग

स्पेशल इफेक्ट्स: डीपफेक तकनीक का उपयोग फिल्मों में स्पेशल इफेक्ट्स के लिए किया जा सकता है। यह पुराने या दिवंगत अभिनेताओं को फिर से स्क्रीन पर जीवंत कर सकता है, जैसे कि स्टार वार्स फिल्मों में कैरी फिशर के चरित्र को पुनर्जीवित करना।

डबिंग और वॉयस सिंक: भाषाओं के बीच संवाद को अधिक स्वाभाविक बनाने के लिए डीपफेक का उपयोग किया जा सकता है। यह तकनीक चेहरे के भावों को संवाद के साथ सिंक करने में मदद करती है।

2. शिक्षा और प्रशिक्षण

प्रशिक्षण सामग्री: प्रशिक्षकों के वीडियो को विभिन्न भाषाओं में बदलने के लिए डीपफेक का उपयोग किया जा सकता है। यह तकनीक प्रशिक्षकों की आवाज और चेहरे के हाव-भाव को अन्य भाषाओं में अनुवादित वीडियो में भी बनाए रखती है।

इतिहास शिक्षा: डीपफेक तकनीक के माध्यम से ऐतिहासिक व्यक्तियों को फिर से जीवंत किया जा सकता है, जिससे शिक्षा को और अधिक आकर्षक और इंटरैक्टिव बनाया जा सकता है।

4. चिकित्सा

भाषण विकारों का इलाज: डीपफेक तकनीक उन मरीजों के लिए उपयोगी हो सकती है जो भाषण विकारों से पीड़ित हैं। यह तकनीक उनकी आवाज को फिर से बनाने और उन्हें प्रभावी ढंग से संवाद करने में मदद कर सकती है।

मानसिक स्वास्थ्य: डीपफेक का उपयोग मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में किया जा सकता है, जैसे कि आभासी थेरेपी सत्रों में। यह तकनीक मानसिक स्वास्थ्य उपचार को अधिक सुलभ और प्रभावी बना सकती है।

5. कला और क्रिएटिविटी

कलात्मक परियोजनाएँ: कलाकार डीपफेक तकनीक का उपयोग करके नई और अभिनव कलात्मक परियोजनाएँ बना सकते हैं। यह तकनीक कलाकारों को विभिन्न शैली और माध्यमों में प्रयोग करने की स्वतंत्रता देती है।

''हालिया मामला: राधिका आप्टे का डीपफेक वीडियो''

2023 में, एक वायरल वीडियो में भारतीय अभिनेत्री राधिका आप्टे को एक विवादास्पद स्थिति में दिखाया गया था। इस वीडियो को डीपफेक तकनीक का उपयोग करके तैयार किया गया था, जिसमें उनके चेहरे को अश्लील कंटेंट में जोड़कर प्रस्तुत किया गया था। यह वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से फैल गया और इससे राधिका आप्टे की छवि को गंभीर नुकसान पहुँचा।

डीपफेक से बचने के लिए आम लोगों को क्या करना चाहिए:–

''सच्चाई की राह पर चलना है जरूरी,
वरना झूठ की लहरें डुबो देंगी पूरी।
इस डिजिटल जाल में फंसना नहीं,
अपनी पहचान को बचाना है जरूरी।''

1. जानकारी और जागरूकता बढ़ाएं

डीपफेक पहचानें: डीपफेक तकनीक और इसके खतरों के बारे में जानें। इसे पहचानने के लिए आवश्यक संकेतों की जानकारी रखें, जैसे कि असामान्य ब्लिंकिंग पैटर्न, चेहरे के भावों में असंगति, और आवाज में विसंगतियां।

शिक्षा: दोस्तों और परिवार को डीपफेक के खतरों और इससे बचने के तरीकों के बारे में शिक्षित करें।

2. सोशल मीडिया पर सावधानी

प्राइवेसी सेटिंग्स: अपने सोशल मीडिया अकाउंट्स की प्राइवेसी सेटिंग्स को मजबूत करें। अपनी निजी जानकारी और तस्वीरें केवल भरोसेमंद लोगों के साथ साझा करें।

फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करने में सतर्कता: केवल उन्हीं लोगों की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करें जिन्हें आप व्यक्तिगत रूप से जानते हैं और भरोसा करते हैं।

3. साइबर सुरक्षा उपाय

एंटीवायरस सॉफ़्टवेयर: अपने डिवाइस पर एंटीवायरस सॉफ़्टवेयर इंस्टॉल रखें और नियमित रूप से अपडेट करें।

फायरवॉल और वीपीएन: फायरवॉल का उपयोग करें और वीपीएन (वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क) के माध्यम से इंटरनेट ब्राउज़िंग करें ताकि आपकी ऑनलाइन गतिविधियाँ सुरक्षित रहें।

निष्कर्ष

डीपफेक तकनीक ने निस्संदेह हमारी डिजिटल दुनिया में एक नई चुनौती खड़ी कर दी है। इसे केवल एक तकनीकी समस्या के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक और नैतिक समस्या के रूप में देखना चाहिए। इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए समाज के सभी वर्गों और सरकार को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। तभी हम इस तकनीक के खतरनाक प्रभावों से सुरक्षित रह सकते हैं और एक स्वस्थ डिजिटल समाज की स्थापना कर सकते हैं।

''सावधान! डिजिटल युग में हर मुस्कान असली नहीं होती।''

यह तकनीक न केवल मनोरंजन और मीडिया के क्षेत्र में, बल्कि हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भी गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। इसके दुरुपयोग से न केवल व्यक्तिगत छवियाँ प्रभावित होती हैं, बल्कि समाज में अव्यवस्था और गलतफहमियाँ भी फैलती हैं।

इस तकनीक के सकारात्मक उपयोगों के बावजूद, इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए समाज के सभी वर्गों और सरकार को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। जागरूकता बढ़ाना, कानूनी ढांचे को मजबूत करना, और तकनीकी उपायों का विकास करना आवश्यक है। तभी हम इस तकनीक के खतरनाक प्रभावों से सुरक्षित रह सकते हैं और एक स्वस्थ डिजिटल समाज की स्थापना कर सकते हैं।

अख्तर रसूल अंसारी
वरिष्ठ प्रबन्धक संकाय (सू.प्रौ.)
प्रबंधन विकास संस्थान बेलापुर
नवी मुंबई

Balancing Act: Empowering Mothers Returning to Work at Bank of India

The Critical Need for Support

In India, the transition back to work after maternity leave presents a significant challenge for many women. The experience of becoming a mother is not only a novel experience but both transformative and demanding, requiring a delicate balancing act between professional responsibilities and family duties. Therefore, when mothers return to work, the support they receive from their employers plays a critical role in determining their success and well-being. Without adequate support structures, many mothers struggle to navigate the pressures of balancing work and home life, and often face barriers such as career stagnation, emotional stress, mental fatigue and limited access to childcare.

As a leading public sector bank, **Bank of India** has long been committed to excellence, inclusivity, and social responsibility. In this context, facilitating the smooth reintegration of returning mothers into the workforce is not only a legal and ethical obligation—it is a strategic imperative. At **Bank of India,** the need to support women returning from maternity leave is not just a matter of equity, but a strategic opportunity to harness the full potential of its workforce. By providing robust support systems for returning mothers, the Bank will be able to ensure greater employee satisfaction, better retention rates, and increased productivity, while contributing to national goals of gender equality and economic growth.

The Current Landscape: Challenges Faced by Returning Mothers

Bank of India's special program for around 450 returning mothers spread over a period of 6 months conducted by Ms. Nidhi Sharma Counselling Psychologist, PCC- Life Career & Transition Coach, Behavorial Facilitator saw positive response from the women employees with more than 50% returning mothers reporting it as an effective group coaching cum counselling program & 37% of the same group reporting the special initiative as highly effective. Further a very recent survey conducted by Ms Nidhi Sharma Counsellor & Behavorial Facilitator amongst 108 women in the same group from **Bank of India** have highlighted a few key challenges faced by mothers returning to work after maternity leave.

57.01% of respondents struggled with balancing work and family responsibilities.

24.30% cited challenges in securing reliable childcare.

Only **21.50%** rated their emotional well-being as "good," emphasizing the mental and emotional toll that comes with the transition.

Only **12.96%** of respondents responded to higher promotion pathway signaling the stunted career progression faced by many returning mothers.

These survey findings underscores the structural gaps in workplace policies that need to be addressed. The challenges faced by returning mothers are not only personal but also systemic, revealing the urgent need for organizations and

the banking sector to adopt more comprehensive support mechanisms.

Key Issues:

Work-Life Balance: Struggling to juggle professional duties with family responsibilities remains one of the top challenges.

Childcare Support: Many mothers face difficulties finding affordable and reliable childcare options, further hindering their ability to return to work.

Career Stagnation: The perception that taking maternity leave negatively impacts career progression is a significant concern.

Mental Health Struggles: Emotional fatigue, guilt, and stress are prevalent among mothers returning to work, highlighting the need for emotional support.

Wellness Policies: While some organizations have policies in place, their implementation often varies, and these policies may not be comprehensive enough to address the diverse needs of returning mothers.

The National Context: Why This Matters for India

India's **female labor force participation** stands at a concerning **22%,** one of the lowest globally. Despite this, increasing women's participation in the workforce could significantly boost India's economic growth—by an estimated **$700 billion** by 2025, according to the McKinsey Global Institute. However, many women leave the workforce after childbirth due to a lack of supportive work policies. Although India has made strides by providing **26 weeks of paid maternity leave**, these legislative reforms are not enough. The real challenge lies in ensuring that women can balance family life and professional growth once they return to work. Without the necessary support systems, many mothers are forced to choose between their careers and families. This decision often leads to career breaks or exits from the workforce, contributing to the gender gap in professional environments.

To overcome these challenges, organizations, especially those as prominent as **Bank of India,** may step forward as leaders in creating inclusive, supportive workplaces that empower mothers to excel in both their personal and professional lives.

Bank of India's Role in Supporting Returning Mothers

Bank of India has a proud tradition of supporting its workforce, including policies that cater to the needs of new mothers. The Bank offers **180 days of maternity leave** and **15 days of paternity leave** for employees, which is an excellent foundation. However, as global trends show, more can be done to further support mothers during their transition back to work. Apart from this leave period, Bank of India has also provided the facility for **child care allowance to the returning mothers .**

To create an even more supportive and empowering environment, **Bank of India** may consider enhancing its policies in the following areas:

On-Site Childcare Facilities: Providing on-site childcare would alleviate the significant burden many working mothers face when trying to find reliable, affordable care for their children.

Mentorship Programs: Pairing returning mothers with mentors—particularly those who have successfully navigated the same challenges—can provide emotional support and career guidance, helping them re-enter the workforce with confidence.

Refresher Programs: Providing the returning mothers with refresher courses to enable them to gain confidence and expertise on the job with upto dated functional knowledge.

Emotional and Mental Health Support: Ensuring that counseling and wellness programs are available can significantly reduce stress and anxiety. Emotional well-being is crucial

for employees to perform their best and feel supported as they return to work.

Industry Best Practices: Learning from Global Leaders

Looking at other global financial institutions can offer valuable lessons on how to better support returning mothers:

HSBC India

HSBC has implemented a **childcare allowance,** offering financial support to employees with children. Additionally, they provide s**upportive returnship programs,** ensuring a smoother transition for new mothers back into the workforce.

Morgan Stanley

Morgan Stanley offers a **gradual return-to-work policy** that allows employees to ease into full-time roles. They also provide **subsidized transportation facilities** for pregnant employees during their final trimester, making it easier for them to manage daily commuting challenges.

Citigroup India

Citigroup offers a **180-day maternity leave** that can be taken in **three flexible options.**

These global examples show that investing in the well-being of returning mothers is not just a social responsibility but a business imperative. Companies that adopt such practices report better employee retention, improved morale, and enhanced productivity—making it a win-win for both employees and employers.

The Business Case: Why Supporting Returning Mothers Makes Sense

Supporting returning mothers is not just a feel-good initiative; it has a significant **business impact.** Here's how:

1. Talent Retention and Knowledge Continuity

Returning mothers represent a valuable segment of our workforce, with years of experience, institutional knowledge, and customer relationship insight. Ensuring their smooth transition back to work helps retain this critical talent and reduces recruitment and training costs.

2. Promoting Diversity and Inclusion

Encouraging the return of working mothers supports our gender diversity goals and reinforces a culture of inclusion. A diverse workforce fosters innovation, collaboration, and better decision-making, contributing to the bank's long-term success.

3. Enhancing Employee Loyalty and Engagement

When employees—particularly working mothers—feel supported, they are more likely to remain committed and engaged. Flexible work arrangements, empathetic leadership, and a supportive environment lead to greater productivity and morale.

4. Strengthening Employer Branding

An inclusive workplace where returning mothers thrive sends a strong signal to future talent and customers alike. It builds Bank of India's reputation as a progressive, people-first institution committed to the holistic well-being of its workforce.

Fostering an Inclusive Workplace: Supporting Returning Mothers.

At Bank of India, our people are our strength. As we strive to be a model of progressive and inclusive leadership in the financial sector, it is imperative that we invest in creating a workplace where every employee feels valued—especially during key life transitions such as motherhood.

Recommendations for the Bank and Policymakers

Structured Reintegration Programs: Develop comprehensive programs that offer refresher courses, mentorship, and career development opportunities for returning mothers.

Childcare Solutions: Provide or establish on-site daycare facilities to reduce the burden on

working mothers.

Mental Health Support: Ensure that emotional well-being is prioritized by offering counseling services and wellness programs to help mothers manage the stress of returning to work.

Childcare Resource Hub on the Employee Portal which would provide **verified directory of local crèches and daycare centers,** with filters by location, hours, and age groups. Listings of **certified home-based caregivers** (nannies, babysitters,), vetted through trusted service partners. Information **on on-site or partnered crèche facilities**, including how to register and whom to contact.

Conclusion: A Call to Action

Supporting returning mothers is not just a matter of policy—it's a reflection of our values as an institution. By implementing these practical and meaningful measures, Bank of India can create a workplace where women feel empowered to return with confidence, continue growing in their careers, and balance **their personal and professional responsibilities with dignity.**

As a leading public sector Bank, we have the opportunity to set a benchmark in fostering gender equity and long-term talent retention. Let us lead with empathy, act with purpose, and ensure that every employee — **especially returning mothers—feel heard, supported, and valued.**

Rajalaxmi Padhi
DGM, Project Head
Starlight

तुम कुछ ऐसी बनना !

इंसानों जैसी छोटी नहीं, पेड़ों जैसी विशाल बनना,
कल नहीं, तुम आज बनना, तितली नहीं तुम बाज़ बनना,

साहिल का किनारा नहीं, तुम नदिया की धार बनना,
नफरत की इस दुनिया में, तुम प्यार बनना,

जो तुम्हें बांधने आए, उसके लिए तलवार बनना,
कैद लोगों के बीच, तुम आजाद बनना,

आसमान चूमती इमारतें नहीं, पूरा का पूरा आसमान बनना,
किसी का भविष्य नहीं, तुम खुद का वर्तमान बनना,

कोयल की आवाज नहीं, शेर की दहाड़ बनना,
समाज की स्पर्धा को छोड़, खुद ही में पहाड़ बनना,

कली नहीं तुम बाग बनना, शीतल नहीं तुम आग बनना,
सातों सरगम का राग बनना, कल नहीं, तुम आज बनना,

तुम मौन की आवाज बनना, ठहरे हुए का आगाज बनना,
शोषितों की शान बनना, अज्ञानियों का ज्ञान बनना,

अनसुनों की पहचान बनना, बेजानों की जान बनना,
बेनामों का नाम भी बनना, कल नहीं, तुम आज बनना,

और रावण मिले जो कोई कहीं, तो तुम राम बनना,
कल नहीं, तुम आज बनना, तितली नहीं तुम बाज़ बनना,

चाँद या चाँदनी नहीं, सौरमंडल का विस्तार बनना,
तारों से खेलना तुम, पूरा का पूरा ब्रह्माण्ड बनना,

राज दरबारों का साज नहीं, सिंहासन का ताज बनना,
कल नहीं, तुम आज बनना, तितली नहीं तुम बाज़ बनना।

अक्षय पार्थ सिंह
प्रबंधक - लेखा एवं निरीक्षण विभाग
आंचलिक कार्यालय - वाराणसी

"एक बगल में चाँद होगा, एक बगल में रोटियां" हकीकत और स्वप्न का द्वंद्व

हर इंसान के दिल के करीब कुछ धुन, कुछ गीत, कुछ नगमे होते हैं। इनको गुनगुनाते ही चेहरे के भाव बदल जाते हैं और लबों पर मुस्कान आ जाती है। ये नगमे जिंदगी के हर उतार-चढ़ाव में आपके साथी होते हैं, मानो जैसे साये की तरह आपके साथ चलते हों।

आपको ऐसी ही एक नगम, जो कि मेरे और लाखों लोगों के दिलों में बसती है, से रु-ब-रु करवाता हूँ। *"एक बगल में चाँद होगा, एक बगल में रोटियां"* पियूष मिश्रा द्वारा लिखा और गाया गया, गैंगस् ऑफ वासेपुर फिल्म का एक गाना है। पियूष मिश्रा को मैं बहुत दिनों से सुन रहा था लेकिन लाइव सुनने का मौका मिला 10 अगस्त 2024 को श्री सन्मुखानंद ऑडिटोरीअम, सायन, मुंबई में, अवसर था बल्लीमारान, द पियूष मिश्रा प्रोजेक्ट।

पियूष मिश्रा जनसाधारण के आइकान तो नहीं हैं, लेकिन एक खास वर्ग के लिए महान गायक, गीतकार, अभिनेता, लेखक और संगीतकार जरूर हैं। बॉलीवुड की चकाचौंध, कृत्रिम दुनिया उनको कभी रास नहीं आई और ना ही बॉलीवुड ने उनको पूरी तरह अपनाया। पियूष मिश्रा जी ने *"बल्लीमारान, द पियूष मिश्रा प्रोजेक्ट"* की शुरुआत करके अपने लाखों प्रशंसकों के ऊपर एक एहसान किया है। बल्लीमारान, क्या आप इस से परिचित हैं? चलिए मैं बताता हूँ, बल्लीमारान को ग़ालिब की हवेली भी कहते हैं। बल्लीमारान, उर्दू शायर मिर्जा ग़ालिब की कर्मस्थली है जो कि दिल्ली के चाँदनी चौक क्षेत्र में आती है, मिर्जा ग़ालिब आगरा से दिल्ली आने के बाद इसी बल्लीमारान में बस गए थे और अपनी अंतिम साँसों तक यहाँ रहे।

अब बात करते है **"एक बगल में चाँद होगा, एक बगल में रोटियाँ"** की। इस गीत को यदि अंग्रेजी के एक शब्द में बयान करना हो तो वो है- 'Ambivalent', जिसका शब्दकोषीय अर्थ है "having mixed feelings or contradictory ideas about something or someone" अर्थात् किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति मिश्रित या विरोधाभाषी विचार अथवा भावनाएँ होना। यह गीत विरोधाभास और द्वंद्व को एक साथ लेकर प्रेम, संघर्ष और जीवन की वास्तविकताओं के बीच एक द्वंद्व को दर्शाता है। इसका हर शब्द मानवीय भावनाओं और अस्तित्व की जद्दोजहद को उजागर करता है।

अपने एक इंटरव्यू में खुद पियूष मिश्रा ने कहा था कि यह गीत मकबूल फ़िदा हुसैन के ऐब्स्ट्रैक्ट आर्ट की तरह है, जिसका मतलब हर इंसान के लिए अलग, हर नज़रिये से अलग, हर दिल को एक अलग भाव देता है। इसलिए मैं आज आपको इस गाने का जो मतलब बताने जा रहा हूँ जरूरी नहीं कि आप उससे इत्तेफाक करें।

"एक बगल में चाँद होगा, एक बगल में रोटियां"

चाँद यहाँ प्रेम, स्वप्न, सौंदर्य, और कल्पना का प्रतीक है जबकि रोटियां जीवन की वास्तविक जरूरतों, संघर्ष और भूख की निशानी हैं। यहाँ यह दिखाने की कोशिश की गई है कि प्रेम और यथार्थ अक्सर एक साथ चलते हैं, लेकिन दोनों को एक साथ साधना मुश्किल होता है। एक ओर इंसान की आत्मा प्रेम और सौंदर्य की ओर आकर्षित होती है, तो दूसरी ओर पेट की भूख और जीवन की आवश्यकताएँ उसे वास्तविकता की कठोर ज़मीन पर ला कर खड़ा कर देती हैं। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की जब बात आती है, तो प्रेम और स्वप्न भी अक्सर कठिनाइयों के आगे फीके पड़ जाते है। जब कोई भूखा होता है, तो क्या वह प्रेम को और

अपने सपनों को उतनी ही शिद्दत से महसूस कर सकता है? कौन नहीं आईएएस बनना चाहता या आईआईटी में पढ़ना चाहता है लेकिन अधिकांश के लिए वहाँ तक पहुँचने की राह माता-पिता की सीमित आय के कारण दूभर हो जाती है। मुखर्जी नगर या कोटा में अपने सपनों को साकार करने की जद्दोजहद के दौरान घर के बिगड़ते आर्थिक हालातों को यथाशीघ्र संभालने का संघर्ष अक्सर स्वप्न और वास्तविकता के बीच अंतर को बढ़ा देता है।

''इक बगल में नींद होगी, इक बगल में लोरियां''

फूटपाथ या खुले आसमान में या की सम्पूर्ण आहार के आभाव में बने 15% से कम फैट वाले शरीर को सोने के लिए लोरियां या डूनलोप की गद्दी की जरूरत नहीं होती, उनको नींद ऐसे ही आ जाती है। लोरियां तो महलों में सुनी जाती हैं, खपरेलों में तो केवल सिसकियाँ और डांटे सुनाई देती हैं। बचपन में तो फिर भी हम चाँद के सपने देखते है और लोरियों की तमन्ना करते हैं लेकिन ज्यों ज्यों जवानी की दहलीज की तरफ पहुंचते है मानो उस चाँद को, अपने सपने को लाल कपड़े में बांध अटारी पर रख, सदा के लिए धूल खाने को छोड़ देते हैं।

''हम चाँद पे रोटी की चादर डाल कर सो जाएंगे
और नींद से कह देंगे लोरी कल सुनाने आएंगे''

जब प्रेम और सपनों पर यथार्थ की भूख हावी हो जाए, तो हम सपनों के ऊपर जरूरत की हकीकत को तवज्जों देने के लिए मजबूर हो जाते हैं। ऐसे हालातों में नींद को भी हम कह देंगे कि भई हमारे पास लोरी सुनाने की फुरसत नहीं है आना है तो आ जाओ, लोरी कल सुना देंगे। रोटी, कपड़ा और मकान की जदोजहद में हम ना जाने कितने सपनों को कुर्बान कर देते हैं।

''इक बगल में खनखनाती सीपियाँ हो जाएंगी
इक बगल में कुछ रुलाती सिसकियाँ हो जाएंगी
हम सीपियों में भर के सारे तारे छू के आएंगे
और सिसकियों को गुद-गुदी कर-कर यूँही बहलाएंगे''

जब मुंबई, दिल्ली या बेंगलुरू जैसे शहर में चंद हजार रु महीना वेतन में घर चलाना पड़े, तो आप चाँद तोड़ के लाने के सपनों के पीछे नहीं भाग सकते। जब आपके पास चंद मुट्ठी भर खनखनाती सीपियाँ यानि कि सिक्के/ मुद्राएं हो और हजारों रुलाती सिसकियाँ यानि कि ख्वाइशें हों, तो आप क्या करेंगे? तब आप रोशन चाँद की चाह नहीं रखेंगे, बल्कि कुछ टिमटिमातें तारों से काम चला लेंगे। बड़े सपनों को दफना कर, नन्ही- नन्ही चाह बटोरेंगे, अपनी मजबूरी, कमजोरी, अभाव और वास्तविक परिस्थिति पर व्यंग करेंगे, चंद सीपियों से हजारों ख्वाइशें खरीदने का स्वांग रचेंगे।

अम्मा! तेरी सिसकियों पे कोई रोने आएगा
ग़म न कर जो आएगा वो फिर कभी न जाएगा

अब यहां से पूरा नज़ारा बदल जाता है, अब हम अपनी मजबूरी के तले चिरकाल तक दबे नहीं रह सकते। जीवन का कठोर सत्य है मौत। जब हम मृत्यु की सच्चाई को आत्मसात कर लेते हैं, तो फिर सारे डर खत्म हो जाते हैं और ये विश्वास सदा हमारे साथ रहता है। फिर हर ग़म गलत हो जाएगा। जब इंसान मौत की सच्चाई को मान लेता है, तो वो निडर हो जाता है, बेखौफ हो जाता है और दुनिया की हर ठोकर को हंस कर गले लगाता है। मौत ही है जो आपको धोखा नहीं देगी, जब आएगी तो फिर कभी न जाएगी।

याद रख पर कोई अनहोनी नहीं तू लाएगी
लाएगी तो फिर कहानी और कुछ हो जायेगी

सिर्फ यादों में खोए रहने से जीवन की हकीकत नहीं बदलेगी। लेकिन, अगर हम कुछ नया करने की ठान लें, सदियों से बंधी जंजीरों को तोड़ने के लिए प्रहार करें तो कोई अप्रत्याशित घटना होती ही है, जो कि कहानी का रुख बदल देती है। इतिहास के पन्ने पलट देती है। फिर जिंदगी में नए अनदेखे रंगों का समावेश होगा, लोगों का नजरिया और स्वभाव बदलेगा, नियम बदलेंगे, दस्तूर बदलेंगे और रिवाज बदलेगा।

''होनी और अनहोनी की परवाह किसे है मेरी जां!
हद से ज़्यादा यही होगा, के यहीं मर जाएंगे
हम मौत को सपना बता कर उठ खड़े हो जाएंगे
और होनी को ठेंगा दिखा कर खिलखिलाते जाएंगे''

अब वो इंसान जो कि मजबूर था, लाचार था, चाँद के ऊपर रोटी की बिस्तर डाल कर सोने को तैयार था, अपने हर सपने के गले को घोंटने वाला, सिकंदर बन चुका है। अब उसे सपनों के बिखरने का डर नहीं, समाज की परवाह नहीं और नहीं है मौत का डर। उसने अपनी सच्चाई को मान लिया है उसके पास खोने को कुछ भी नहीं और पाने को अथाह समंदर है। अब हर क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार है जिंदगी और मौत से परे, एक नए आगाज को अंजाम देने तो आतुर।

अब मौत भी आ जाए तो ग़म नहीं, क्योंकि जिंदगी के मायने पूरे हो गए हैं। मंगल पांडे, झांसी की रानी, भगत सिंह, चंद्र शेखर आजाद, खुदी राम बोस, अशफ़ाकउल्ला खान, नेताजी सुभाष चंद्र बोस सभी मौत को सपना बता कर उठ खड़े होने को तैयार हैं और होनी को ठेंगा दिखा कर खिलखिला रहे हैं।

यह गीत केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि भावनाओं का समंदर है। यह प्रेम और सपनों की कोमलता और जीवन की कठोर सच्चाइयों के बीच का घमासान को दिखाता है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या प्रेम और सपने केवल भावनाओं से जीवित रह सकते है, या इन्हें वास्तविकता की कठोर ज़मीन पर भी टिकना पड़ता है।

इसकी गहराई और भावनात्मक शक्ति ही इसे इतना प्रभावशाली बनाती है कि हर सुनने वाला इसे अपने जीवन के किसी न किसी पहलू से जोड़ सकता है।

प्रमोद कुमार
मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा)
एफ़जीएम कार्यालय, मुंबई

छूट गई है घड़ी तुम्हारी, यहीं कहीं मेज पर!

भटके भटके फिर रहे,
इधर-उधर जिसकी खोज में,
छूट गई है घड़ी तुम्हारी,
यहीं कहीं मेज पर!

नए संबंधों के चक्कर में,
पुराने छूट रहे हैं कहीं,
सच है यही कि समय रुकता नहीं,
छूटी घड़ी अभी भी पड़ी है वहीं।

जीवन की आपा-धापी में,
अलबेली सी ख्वाहिशें लिए,
दो जून की रोटी के लिए घर छोड़ चले,
संग परिजनों की यादें गहरी जोड़ चले।

कुछ रिश्ते सच्चे थे स्नेह भरे,
अगाध प्रेम की झलक थी कहीं,
नई दौड़ में, नए सफर में,
पुराने बंधन छूट गए कहीं।

चाकरी की अभेद उलझन में,
तनख्वाह की अतृप्त तृष्णा में,
धरा-आकाश सब एक किया,
स्वप्नों को भी खाक किया।

रुकती नहीं घड़ी, थमता नहीं समय
आ बाँध फिर वही घड़ी,
जो छूट गई थी घड़ी तुम्हारी,
यहीं कहीं मेज़ पर!

मनीष नारायण
प्रबंधक, रामगढ़ कैंट शाखा
हजारीबाग अंचल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस / International Women's Day

प्रधान कार्यालय

अहमदाबाद अंचल

बर्धमान अंचल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस / International Women's Day

एसटीसी भोपाल अंचल

चंडीगढ़ अंचल

गांधीनगर अंचल

गोवा अंचल

गुवाहाटी अंचल

हरदोई अंचल

हैदराबाद अंचल

जबलपुर अंचल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस / International Women's Day

जमशेदपुर अंचल

कानपुर अंचल

खंडवा अंचल

मुंबई दक्षिण अंचल

नागपुर अंचल

एफजीएमओ – नई दिल्ली

एफजीएमओ पटना

सिलीगुड़ी अंचल

महिला सशक्तिकरण का पर्याय है : स्वयं-सहायता समूह (SHG)

झांसी के समीप मृतप्राय हो चुकी घुरारी नदी को वहां की ग्रामीण महिलाओं ने जल सहेली जैसी पहल से नया जीवन दान दिया। यह संभव हो पाया स्वयं सहायता समूह जैसी संकल्पना के कारण जो महिलाओं एवं अन्य सीमांत वर्गों को अपनी आर्थिक पराधीनता से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

वर्ष 2014 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के एक दल ने मेघालय के मैरांग क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता एवं कार्यप्रणाली पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला ने मेरांग की रहने वाली लिटलेडा रानी के जीवन को परिवर्तित कर दिया। लिटलेडा रानी दो बच्चों (एक बेटी एवं एक बेटा) की मां है, जिन्होंने बीमारी के चलते अपने बेटे को खो दिया था। एसएचजी से जुड़ने से पूर्व लिटलेडा दिन में दिहाड़ी मजदूरी एवं सांझ में चने का ठेला लगा कर अपना जीवन-यापन कर रही थीं। एसएचजी से जुड़ते ही उन्हें ऋण की प्राप्ती हूई जिससे उन्होंने एक सिलाई मशीन एवं कुछ कपड़े खरीदे। धीरे-धीरे अपनी दुकान का विस्तार करके उन्होंने स्टेशनरी, किताबें एवं अन्य आवश्यक सामग्रियों को शामिल किया। एसएचजी का सदस्य होने के कारण उन्हें आईसीएआर के माध्यम से मशरुम कल्टीवेशन की तकनीक को सीखने का अवसर भी मिला जिससे उन्होंने इसकी खेती करना प्रारंभ कर दिया एवं अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया एवं अपने बच्चों को एक बेहतर भविष्य देने का प्रयास किया। यह तभी संभव हो पाया जब महिला सशक्तिकरण के लिए भारत सरकार ने एसएचजी में महिलाओं की भूमिका को बढ़ावा दिया।

महिला सशक्तिकरण का सीधा सम्बन्ध महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक, एवं राजनैतिक विकास से है। महिला सशक्तिकरण केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि समाज के विकास का आधार है। जब महिलाएं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भागीदार होती हैं, तो वे न केवल स्वयं के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए सुधारों की दिशा तय करती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, व्यवसाय, अंतरिक्ष, विज्ञान एवं तकनीकि जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी से समग्र विकास संभव होता है। आर्थिक स्वतंत्रता महिला सशक्तिकरण की कुंजी है। कई महिलाएं अब छोटे-छोटे व्यवसायों में भागीदारी से लेकर बड़े उद्योगों की स्वामिनी भी हैं। स्वालंबी महिला अपने परिवारों का भरण-पोषण करने के साथ-साथ समाज में सकारात्मक प्रभाव तो डालती ही है साथ ही देश के आर्थिक विकास को मजबूत करती है। समाज के सर्वांगिण विकास के लिये लैंगिक समानता अत्यावश्यक है । महिलाओं को सशक्त करने का सबसे सुदृढ तरीका होगा उनको विकास की मुख्य धारा में शामिल करना । दुनियाभर में महिलाओं के स्थिति में सुधार के लिये सरकारें अपनी ओर से भर्षक प्रयास कर रही हैं ।

ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण प्रयासों मे से एक स्वयं-सहायता समूह है। स्वयं-सहायता समूह (एसएचजी) कुछ ऐसे लोगों का एक अनौपचारिक संघ है जिसमें वे अपने रहन-सहन की परिस्थितियों में सुधार करने हेतु स्वेछा से एक साथ आते हैं। एक एसएचजी आमतौर पर समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की 10-12 महिलाओं का सामुदायिक समूह होता है।

एसएचजी समूह संयुक्त आर्थिक गतिविधियों को शुरू करने हेतु अपने वित्तीय संसाधनों को समेकित कर छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए सदस्यों को उचित ब्याज दर पर पैसा उधार देते हैं। स्वयं-सहायता समूह (एसएचजी) आंदोलन ग्रामीण क्षेत्रों में महिला लचीलापन और उद्यमिता के सबसे शक्तिशाली इन्क्यूबेटरों में से एक है।

भारत में स्वयं सहायता समूहों की उत्पत्ति:

- **1970 का दशक:** भारत में स्वयं सहायता समूहों की शुरुआत 1970 के दशक में हुई थी। इलाबेन भट्ट द्वारा स्थापित स्व-रोजगार महिला संघ (सेवा) को अक्सर एक निर्णायक क्षण माना जाता है। इसने गरीब और स्व-रोज़गार महिला श्रमिकों को संगठित किया, आय सृजन एवं समर्थन के लिये एक मंच प्रदान किया।
- **1980 का दशक:** 1980 के दशक में, मैसूर पुनर्वास और क्षेत्र विकास एजेंसियों ने निर्धनों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को ऋण प्रदान करने के लिये एक माइक्रोफाइनेंस रणनीति के रूप में एसएचजी की शुरुआत की।
- **1992:** राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने 1992 में एसएचजी-बैंक लिंकेज कार्यक्रम शुरू किया। इस पहल ने एसएचजी को औपचारिक बैंकिंग संस्थानों से जोड़ा गया, जिससे विभिन्न समूहों के लिये ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुँच संभव हो गई।
- **1990 का दशक से अब तक:** 1990 के दशक से, सरकार ने स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोज़गार योजना (एसजीएसवाई) और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से एसएचजी को सक्रिय रूप से समर्थन दिया है। इन पहलों ने भारत में एसएचजी आंदोलन की पहुँच और प्रभाव में महत्वपूर्ण रूप से योगदान दिया है।
- **कुदुम्बश्री मिशन:** केरल में स्वयं सहायता समूह कुदुम्बश्री मिशन की 26वीं वर्षगाँठ मनाई गई। वर्ष 1998 में स्थापित, कुदुम्बश्री में वर्तमान में तीन लाख नेबरहुड ग्रुप में 46.16 लाख सदस्य शामिल हैं, जो मूल रूप से महिलाओं के उद्यमों पर केंद्रित था, लेकिन अब कानूनी सहायता, परामर्श, ऋण, सांस्कृतिक जुड़ाव और आपदा राहत प्रयासों में भाग लेने की पेशकश कर रहा है।

जिस तरह से सरकारें अपनी नीतियों और कार्यक्रमों में एसएचजी को शामिल कर रही हैं, वह काफी आश्चर्यजनक है क्योंकि भारत में कभी भी गांव स्तर पर काम करने के लिए म हिलाओं का इतना संगठित संगठन नहीं था, जो लगभग सभी घरों तक पहुँच सके। इससे विकास कार्यक्रमों को लागू करना आसान हो जाता है। इससे भी बढ़कर, एसएचजी को देश भर में योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू करने के लिए शामिल किया गया है, जैसे कि स्थानीय सामुदायिक रसोई का प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवाएँ चलाना और झुग्गी पुनर्विकास पहलों की देखरेख करना। सरकारी आँकड़ों के अनुसार, एसएचजी की लगभग 3 मिलियन महिला सदस्य वर्तमान में 2.1 मिलियन कृषि-पोषक उद्यानों का प्रबंधन कर रही हैं।

वर्तमान में भारत सरकार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली लखपति दीदी योजना प्रारंभ की जिसके सकारात्म क परिणाम मिल रहे हैं। लखपति दीदी एक ऐसी सरकारी पहल है जिसका उद्देश्य एसएचजी में महिलाओं को स्थायी आजीविका प्रथाओं के माध्यम से प्रति वर्ष कम-से-कम 1,00,000 रुपए कमाने के लिये सशक्त बनाना है। यह कार्यक्रम वर्ष 2023 में 2 करोड़ महिलाओं के प्रारंभिक लक्ष्य के साथ शुरू किया गया था, लेकिन सत्र 2024-25 में लक्ष्य को बढ़ाकर 3 करोड़ कर दिया गया है।

आज, इन समूहों को दुनिया की सबसे बड़ी माइक्रोफाइनेंस परियोजना माना जाता है। डीएवाई-एनआरएलएम के आंकड़ों से पता चलता है कि फरवरी 2023 तक, लगभग 8.9 मि लियन एसएचजी ने 2.54 लाख करोड़ रुपये का ऋण लिया है। 2023-24 (फरवरी 2024 तक) में, इन समूहों ने 1.7 लाख करोड़ रुपये के ऋण वितरित किए। आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 के अनुसार, पिछले दस वर्षों (वित्त वर्ष 13 से

वित्त वर्ष 22) के दौरान ऋण से जुड़े एसएचजी की संख्या 10.8 प्रतिशत की सीएजीआर चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ी है, जबकि इसी अवधि के दौरान प्रति एसएचजी ऋण वितरण 5.7 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ा है।अक्सर कहा जाता है कि भारत के वाणिज्यिक बैंकों की बैलेंस शीट अच्छी है। यह मुख्य रूप से गैर-निष्पादित ऋणों की बड़े पैमाने पर माफ़ी के कारण है। लेकिन एसएचजी-बीएलपी के तहत ऋण शायद ही कभी खराब होते हैं या उन्हें माफ़ी की आवश्यकता होती है। आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 में कहा गया है, विशेष रूप से, एसएचजी का बैंक पुनर्भुगतान 96 प्रतिशत से अधिक है, जो उनके ऋण अनुशासन और विश्वसनीयता को रेखांकित करता है ।

यह एक सशक्तिकरण का उदाहरण है जो न केवल आर्थिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक और मानसिक दृष्टि से भी महिलाओं को एक नया दृष्टिकोण और अवसर प्रदान करता है। भारत में महिलाओं की स्थिति समय के साथ बदलती रही है, और यह बदलाव आर्थिक, राजनीतिक, और सामाजिक संरचनाओं के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है।

''स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से हुआ सशक्तिकरण सतत प्रकृति का है। यह पानी में पत्थर से पनपने वाली लहरों जैसा प्रभाव पैदा करता है जो परिवारों और समुदायों को रूपांतरित कर देता है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से, महिलाएं खुद को और अपने यो-गदान को महत्व देना सीखती हैं, जिससे आत्म-मूल्य की एक नई भावना पैदा होती है। यह एकता से उत्पन्न होने वाली शक्ति और आत्म-अभिव्यक्ति की पहचान को रेखांकित करता है।''

सोर्स-डाउनटूअर्थ,पत्रसूचनाकार्यालय(पीआईबी),अन्य।

सस्मिता निशिका
अधिकारी
आंचलिक कार्यालय केंदुझर

बेटियाँ

जब जब जन्म लेती हैं बेटियाँ
खुशियाँ साथ लाती हैं बेटियाँ
खिलती हुई कलियाँ हैं बेटियाँ
महक उठे जीवन की बगिया
ऐसे सुंदर फूल होती हैं बेटियाँ
ये बेटियाँ तो अनमोल होती हैं।

सुबह की पहली सौगात है बेटी
चिड़ियों की चहचहाट की तरह
आँगन की पहली पुकार है बेटी
सर्दियों की सुहानी धूप की तरह
ये बेटियाँ तो अनमोल होती हैं।

सबसे अनमोल दौलत हैं बेटियाँ
लक्ष्मी का रूप होती हैं बेटियाँ
दुनियाँ में उन्हें आने तो दो
चैन से उनको जीने तो दो
उनसे अनमोल न कोई धन है
वो तो खुशियों का दर्पण हैं
ये बेटियाँ तो अनमोल होती हैं।

संतोष कुमार
प्रबंधक
खुदरा व्यापार केंद्र
गया अंचल

पुस्तक समीक्षा:

अक्टूबर जंक्शन

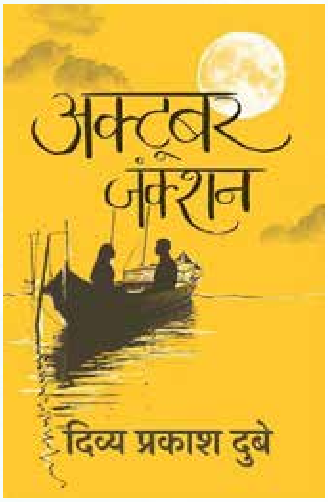

कई दिनों से अक्सर जब भी मैं इंस्टाग्राम खोलता, तो एक पुस्तक से संबंधित अनेकों रील देखने को मिलती थी। इन रील्स को देखकर एकाएक मन ''अक्टूबर जंक्शन'' की तरफ खिंचा चला गया। ''अक्टूबर जंक्शन'' दिव्य प्रकाश दुबे द्वारा रचित एक ऐसा उपन्यास है, जिसका कथानक पाठक को संवेदनाओं और भावनाओं के भंवर में बहा ले जाता है। यह उपन्यास पारंपरिक प्रेम कहानियों से बिलकुल अलग है। इसकी कहानी प्रेम, वियोग, आत्म-स्वीकृति और आत्म-खोज की परतों में धीरे-धीरे उतरती हुई प्रतीत होती है। लेखक ने इसे एक ऐसी शैली में लिखा है जो न तो पूर्णत: डायरी शैली है और न ही पारंपरिक कथानक शैली। यह दोनों शैलियों के मिश्रण की एक शानदार यात्रा है।

कहानी की शुरुआत बनारस के एक कैफे में होती है जहाँ चित्रा और सुदीप पहली बार 10 अक्टूबर 2010 को अनजाने में मिलते हैं। यह कोई सामान्य मुलाकात नहीं होती, बल्कि एक ऐसे रिश्ते या संबंध की शुरुआत होती है जिसे कोई नाम नहीं दिया जाता।

दोनों निर्णय लेते हैं कि वे हर साल इसी तारीख को, बिना किसी सूचना के, इसी जगह पर मिलेंगे। अगले दस वर्षों तक यह सिलसिला चलता है। हर साल जब भी वो दोनों मिलते है, अपने जीवन की उन घटनाओं को साझा करते हैं, जिन्हें वे किसी और से साझा नहीं कर पाते। जिसमें उनकी खुशी, ग़म, असफलताएँ, सपने और अधूरे रिश्ते शामिल होते हैं।

''हर अधूरी मुलाकात एक पूरी मुलाकात की उम्मीद लेकर आती है।''

इन दस वर्षों में जीवन दोनों को कई दिशाओं में ले जाता है-सुदीप एक सफल उद्यमी बनता है, जबकि चित्रा अपने लेखन और पहचान की खोज में संघर्षरत रहती है। इन मुलाकातों के दौरान दोनों न सिर्फ एक-दूसरे को, बल्कि खुद को भी समझने लगते हैं।

एक ओर सुदीप एक महत्वाकांक्षी, व्यवस्थित और व्यावसायिक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति है। लेकिन उसका आंतरिक जीवन उलझनों से भरा है। वह बाहरी रूप से भले ही संतुलित दिखता है, परंतु उसका अकेलापन और भावनात्मक असुरक्षा इन मुलाकातों में उजागर हो जाती है। वहीं चित्रा का किरदार एक सृजनशील, संवेदनशील और जिद्दी लेखिका के रूप प्रस्तुत किया गया है। वह सामाजिक अपेक्षाओं से जूझती है, अपने अस्तित्व और लेखन के मूल्य को तलाशती है। उसकी बेचैनी और संवेदनशीलता उसे सुदीप के करीब लाती है।

''सिर्फ किताबें ही नहीं, अक्सर कुछ लोग भी अधूरे छूट जाते हैं।''

दोनों ही किरदारों की गहराई और जटिलता कहानी को जीवंत बनाती है। लेखक ने इन पात्रों को आदर्श नहीं, बल्कि संशय, गलतियों और आत्मसंघर्षों से भरपूर वास्तविक बनाया है।

यह उपन्यास एक ऐसे संबंध की बात करता है जिसे कोई स्पष्ट नाम नहीं दिया गया है-ना प्रेम, ना मित्रता, ना ही कोई रिश्ता।

''कोई रिश्ता सिर्फ इसलिए खत्म नहीं होता कि आपने उसका नाम नहीं रखा।''

यह दो दृष्टिकोणों का मिलन है, जो हर साल कुछ समय के लिए एकमत होता है।

हर अध्याय एक नए वर्ष में 10 अक्टूबर को घटित होता है। समय यहाँ सिर्फ एक बीतने वाली चीज़ नहीं है, बल्कि एक पात्र की तरह व्यवहार करता है। हर साल के साथ पात्र बदलते हैं, उनकी सोच, उम्मीदें और दर्द भी। दोनों पात्रों के माध्यम से यह प्रतीत होता है कि जीवन में सब कुछ हासिल कर लेने के बावजूद भी अधूरापन रह ही जाता है। यही अधूरापन इंसान को खोज करने, लिखने और रिश्ते बनाने की साधनावस्था के लिए प्रेरित करता है।

''सुन पाना इस दुनिया का सबसे मुश्किल काम है। लोग बीच में समझाने लगते हैं।''

दिव्य प्रकाश दुबे की लेखन शैली सरल, प्रभावशाली और संवादात्मक है। उनकी भाषा भावनाओं को बड़ी सहजता एवं सटीकता से अभिव्यक्त करती है, जिससे पाठक खुद को पात्रों के साथ जुड़ा हुआ महसूस करता है। बनारस की पृष्ठभूमि, घाटों का वर्णन, सर्दियों की सुबहें-इन सबका वर्णन इतना जीवंत है कि पाठक खुद को उसी परिवेश में मौजूद पाता है।

''अक्टूबर जंक्शन'' एक ऐसी किताब है जिसे आप महसूस करते हैं, न कि सिर्फ पढ़ते हैं। यह उपन्यास उन लोगों के लिए है जो संबंधों को गहराई से समझते हैं, जिनके जीवन में अधूरे रिश्ते या अधूरी कहानियां हैं। दिव्य प्रकाश दुबे ने प्रेम, समय, अधूरापन और आत्मा के जंक्शन पर खड़ी एक बेहद खूबसूरत और मार्मिक कहानी लिखी है।

मुकेश कुमार
प्रबन्धक(राजभाषा)
लुधियाना अंचल

Why Shouldn't I Be Grateful?

Why shouldn't I be grateful to my Bank—BOI?
It gave me respect and a name held high.
A workplace of purpose, a canvas to grow,
A stage where my personality could brightly glow.
It forged connections, PRs galore,
And opened career paths I couldn't ignore.
From clerk to Computer Officer,1996 saw me rise,
And onward to Chief Manager IT, a career prized.

Why shouldn't I be grateful to my Bank—BOI?
It sent me across cities and states far and wide,
From Bihar to Bengal, Madhya Pradesh, too,
To Maharashtra's charm and a vibrant view.

It even flew me to Indonesia and Singapore's shore,
Expanding my horizons, opening more doors.
A diploma from the UK, CAIIB achieved,
With BOI's faith, my potential was believed.

Why shouldn't I be grateful to my Bank—BOI?
It entrusted me with migration's tech evolution,
From manual to CBS—a seamless execution.
At Data Centres, domestic and abroad,
It honed my skills, for which I applaud.

As IT Faculty, as Vice Principal, I stood tall,
Sharing knowledge with colleagues—big and small.
Each role a chance to inspire and teach,
Each moment a milestone within my reach.

Why shouldn't I be grateful to my Bank—BOI?
It uplifted my family, gave us a life refined,
From my son's US journey to my daughter's bright mind.
Flats in Mumbai and Pune, an SUV with style,
All thanks to BOI, mile after mile.

It saw us through challenges, lent a steady hand,
In health and hardship, it always did stand.
Perks, accommodations, and a life well-earned,
With BOI, I thrived, and its respect I returned.

Why shouldn't I be grateful to my Bank—BOI?
As I approach retirement, it's clear to see,
The benefits and pension secure life for me.
Even family pension, should fate intervene,
A gesture so thoughtful, so wholly serene.

Through officers' associations, bonds grow strong,
Even post-retirement, BOIPARA carries me along.
For all its support, for lifting me high,
Why shouldn't I be grateful to my Bank—BOI?

So, here's my thanks, with a heart full of pride:
Thank you, Bank of India, my lifelong guide.
For all you've given, in big ways and small,
Thank you, BOI—you gave me it all.

Md.Nafis Arshad
Ex Vice Principal
BOI ITTC, Pune

कोषिक्कोड - साहित्य का शहर; प्यार का भी...

दक्षिण भारत के छोटे-से राज्य केरल के कोषिक्कोड जिले का नाम भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। अपने भोजन-वैविध्य, संगीत प्रेम, पर्यटन तथा सहृदय नागरिकों के लिए विख्यात इस शहर ने विश्व के नक्शे में अपनी विशेष पहचान अर्जित की है। यद्यपि इस शहर का औपचारिक नाम कोषिक्कोड है, लेकिन इसे अक्सर 'कालिकट' भी कहा जाता है। 'कालिकट' नाम की उत्पत्ति 'कैलिको' (Calico) शब्द से हुई है, जो एक विशेष प्रकार के हाथ से बुने हुए सूती कपड़े के लिए प्रयोग किया जाता था, जिसे कोषिक्कोड बंदरगाह से निर्यात किया जाता था। इस प्रकार शहर के नामकरण के पीछे ऐसी अनेकों कहानियाँ हैं।

मध्यकालीन ऐतिहासिक दस्तावेज़ों में कोषिक्कोड को देश के प्रमुख मसाला व्यापार केंद्रों में से एक के रूप में अंकित किया गया है। काली मिर्च, अदरक, लौंग, इलाइची, जायफल, तेज पत्ता आदि मसालों से धनी होने के कारण इसे मसालों का शहर भी कहा जाता था। उस समय मसाले बहुमूल्य वस्तुओं में गिने जाते थे। मसालों के शहर के बारे में जानने और यहाँ के मसालों को प्राप्त करने के लिए यूरोप के लोग बहुत उत्सुक थे। इसी कारण अनेक यूरोपीय खोजी नाविकों ने भारत के समुद्री मार्ग का पता लगाने की कोशिश की और सन् 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक वास्को डी गामा पहली बार समुद्री मार्ग से यहाँ पहुंचा। इस प्रकार यूरोप के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों की शुरुआत कोषिक्कोड से हुई थी।

ऐतिहासिक दृष्टि में देखें तो ब्रिटिश शासन से पहले, कोषिक्कोड पर ज़मोरिन महाराजाओं का शासन था। उनके शासनकाल को कोषिक्कोड का स्वर्ण युग माना जाता है। वर्तमान में इस शहर को एक नई उपाधि भी प्राप्त हुई है। जून 2024 को यूनेस्को ने कोषिक्कोड को औपचारिक रूप से भारत का पहला 'साहित्य शहर' घोषित किया। 2004 में गठित यूनेस्को के क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (यूसीसीएन) दुनिया के ऐसे शहरों को जोड़ते है, जो साहित्य, शिल्प और लोक कला, सिनेमा, पाककला, मीड़िया, डिज़ाइन और संगीत जैसे सृजनात्मक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध हैं। यह नेटवर्क इन शहरों के महापौरों और अन्य साझेदारों का एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित करता है, जो दुनिया भर के रचनात्मक शहरों के बीच सृजनात्मक संबंधों को मज़बूत करने का एक अनूठा अवसर होता है।

साहित्य शहर कोषिक्कोड: कोषिक्कोड की जीवंत साहित्यिक विरासत इसके पुस्तकालयों के कारण है। 2024 के अनुसार शहर में 545 से अधिक पुस्तकालय हैं, जिसमें केरल राज्य पुस्तकालय परिषद (के.एस.एल.सी.) से संबद्ध 62 पब्लिक पुस्तकालय शामिल हैं और इसके अलावा 269 संस्थागत पुस्तकालयों में भी साहित्यिक संसाधन उपलब्ध हैं। कोषिक्कोड की साहित्यिक परंपरा बहुत समृद्ध है। इस भूमि ने एस.के. पोट्टेक्काड, उरूब, तिक्कोडियन, पी. वल्सला जैसे कई मशहूर लेखकों को जन्म दिया है। साथ ही एम. टी. वासुदेवन नायर, वैक्कम मुहम्मद बषीर, सुकुमार अषीक्कोड जैसे लेखक भी जन्म से भले न सही, लेकिन अपने कर्म से कोषिक्कोड के निवासी थे। इस प्रकार के कहानीकारों, कवियों, नाटककारों, उपन्यासकारों, आलोचकों के सृजनात्म

क योगदान ने मलयालम साहित्य को और प्रौढ़ बनाया। इनमें से एस. के. पोट्टेक्काड और एम. टी. वासुदेवन नायर को 1980 तथा 1995 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी नवाज़ा जा चुका है।

कोषिक्कोड में डीसी बुक्स और मातृभूमि जैसी प्रमुख प्रकाशन कंपनियों द्वारा आयोजित साहित्योत्सव हर साल आयोजित किए जाते हैं। इसमें डीसी बुक्स द्वारा आयोजित केरल लिटरेचर फेस्टिवल 2017 से निरंतर आयोजित किया जा रहा है, जो एशिया का सबसे बड़ा लिटरेचर फेस्टिवल है और कोषिक्कोड इसका स्थाई आयोजन स्थल है। हर साल जनवरी महीने आयोजित होने वाले इस साहित्योत्सव में भाग लेने के लिए देश-विदेश के बहुत सारे लोग आते हैं। इस दौरान नोबेल पुरस्कार विजेताओं, बुकर पुरस्कार विजेताओं, ऑस्कर विजेताओं, देश-विदेश के प्रतिष्ठित साहित्यकार, कलाकार, नेताओं आदि से मिलने और उनसे बातचीत करने का मौका मिलता है। पिछले साल चार दिनों के लिए आयोजित इस साहित्योत्सव में छह लाख से अधिक लोगों ने सहभागिता की थी।

कोषिक्कोड के संगीत, खेल एवं भोजन – जिस तरह हिंदुस्तानी संगीत और ग़ज़लें कोषिक्कोड की रातों को संगीतमय बनाती हैं, उसी तरह मोहम्मद रफ़ी, किशोर कुमार, मुकेश और मन्नाडे के मधुर और अमर गीत हमेशा इस शहर के दिल को छूते हैं। शहर के केंद्र में स्थित टाउनहॉल में हर दिन किसी न किसी ऑर्केस्ट्रा-संगीतकार के कार्यक्रम चलते ही रहते हैं। भरा-पूरा टाउनहॉल और वहाँ के सहृदय नागरिकों का प्यार एवं प्रोत्साहन हर कलाकार के लिए अविस्मरणीय होता है। कोषिक्कोड के लिए फुटबॉल भी संगीत के समान महत्वपूर्ण है। समुद्र तट तथा घास के मैदानों पर बच्चों से बुजुर्ग तक फ ुटबॉल खेलते हैं। फीफा विश्व कप, यूरो कप, कोपा अमेरिका जैसी अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल प्रतियोगिताओं को बड़े-बड़े स्क्रीनों पर जिले के हर कोने में दिखाया जाता है।

केरल की भोजन राजधानी के रूप में विख्यात इस शहर में 'कोषिक्कोडन बिरियानी', 'चट्टिपत्तिरी', 'इराच्चिप्पत्तिरी', 'एलांची' और 'उन्नाक्काया' जैसे बहुत सारे विशेष व्यंजन परोसे जाते हैं। यहाँ तक कि वहाँ मिलने वाली 'सुलैमानी' नामक विशेष नींबू मिश्रित चाय, में भी कोषिक्कोड के आतिथ्य और प्रेम का स्पर्श है। आज अरबिक, चीनी, फ़ारसी, कॉनटिनेन्टल, जैसे हर जगह के भोजन यहाँ उपलब्ध हैं। कोषिक्कोड के पारागण रेस्टोरेंट को पिछले साल क्रोयेशिया के टेस्ट एट्लस ऑनलाइन फुड गाइड ने विश्व के सबसे प्रतिष्ठित 100 रेस्टोरेंटों में 5वाँ स्थान दिया है और इस रेस्टोरेंट के बिरियानी को विशेष व्यंजन के रूप में जाना जाता है।

कोषिक्कोड हलवे की मिठास का आनंद लेने वाले यूरोपीय लोग इसे स्वीट मीट कहते थे, और जिस गली में इसकी दुकाने थी उसे 'स्वीट मीट स्ट्रीट' नाम दिया। जो बाद में एस.एम. स्ट्रीट के संक्षिप्त नाम से पुकारा जाने लगा। मलयालम में यह गली 'मिठाइत्तेरुव' नाम से प्रसिद्ध है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हमेशा व्यस्त रहने वाली इस गली के दोनों ओर दुकानें हैं और उन दुकानों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उपलब्ध न हो।

कोषिक्कोड के कुछ पर्यटन स्थल–

तुषारगिरी झरना – कोषिक्कोड के कोडेनचेरी में स्थित, 'तुषारगिरी' साथियों के साथ सैर करने या अकेले घूमने जाने के लिए एकदम सही जगह है। तुषारगिरी नामकरण धुंध से ढकी चोटी की पहचान के रूप में किया गया है। पानी की धार को देखना और महसूस करना एक यादगार अनुभव होता है। मानसून के दौरान झरनों का प्रवाह अधिक होता है, और मानसून के चरम पर इस स्थान पर जाना जोखिमपूर्ण है।

जानकिक्काड इको–टूरिज़्म – कुट्टियाडी बाँध से सिर्फ़ 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, जानकिक्काड इको–टूरिसम् कोषिक्कोड वन प्रभाग की कुट्टियाडी रेंज के केंद्र में स्थित है। 131 हेक्टेयर में फैले इस मनमोहक क्षेत्र का नाम भारत के भूतपूर्व रक्षामंत्री वी. के. कृष्ण मेनन की बहन, वी. के. जानकी अम्मा के नाम पर पड़ा है, जो इस ज़मीन की मालिक थी। जानकिक्काड जैव विविधता का खज़ाना है, जहाँ हर रास्ता इसके समृद्ध वनस्पतियों और जीवों के एक नए पहलू से पर्यटकों को अवगत करवाता है।

काप्पाड बीच – शहरी जीवन की हलचल से दूर एक शांत समुद्र तट, जो केरल का एकमात्र समुद्र तट है जिसे अंतर्राष्ट्रीय ब्लू फ्लैग प्रमाणन प्राप्त है। यह टैगिंग उन समुद्री संसाधनों को दी जाती है जो स्वच्छता, सुरक्षा, इको–फ्रेंडली और स्थिरता के कड़े वैश्विक मानकों को पूरा करते हैं। कप्पाकडावु बीच नाम से ख्यातिप्राप्त इस ऐतिहासिक समुद्र तट पर ही पुर्तगाली नाविक वास्को डी गामा ने 20 मई 1498 को पहली बार भारत में कदम रखा था। यह भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है।

सरोवरम् बायोपार्क – सरोवरम् बायोपार्क एक हरा–भरा पारिस्थितिक पार्क है जो प्रकृति संरक्षण, मनोरंजन और पर्यावरण शिक्षा का एक आदर्श मिश्रण प्रदान करता है। 200 एकड़ में फैले इस शहरी वन को स्थानीय वनस्पतियों और जीवों को संरक्षित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, साथ ही निवासियों और पर्यटकों के लिए एक विश्राम स्थल भी है।

सर्गालया कला और शिल्प गाँव – कोषिक्कोड के वड़करा के पास स्थित इरिंगल में केरल कला और शिल्प गाँव सर्गालया, केरल सरकार के पर्यटन विभाग की एक पहल है। यह एक विशिष्ट स्थान है जहाँ आप न केवल केरल के पारंपरिक कारीगरों द्वारा तैयार किए गए उत्पाद देख सकते हैं, बल्कि शिल्प–निर्माण की बारीकियों के बारे में सीख सकते हैं।

कडलुंडि पक्षी अभयारण्य – कडलुंडि पक्षी अभयारण्य,जो 3 किलोमीटर से अधिक सुंदर द्वीप समूहों में फैला हुआ है, कोषिक्कोड के समुद्र तट पर स्थित है जहाँ कडलुंडि नदी अरब सागर से मिलती है। आज के समय में, यह भूमि अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यह सैकड़ों से अधिक देशी पक्षियों का घर है और यहाँ के मैंग्रोव वन ऊदबिलाव और सियार के लिए एक प्राकृतिक आवास हैं।

कोषिक्कोड बीच – एक सुंदर समुद्र तट जो अपनी सुनहरी रेत, समुद्री हवा और मनोरंजक गतिविधियों के लिए जाना जाता है। यह बीच अपने शांत आकर्षण के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ से सूर्यास्त के लुभावने दृश्य दिखाई देते हैं, जो आजकल रात में भी संगीत, खान–पान के साथ जागता रहता है।

मानानचिरा स्क्वायर – एक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थल जिसमें मानव निर्मित झील, पारंपरिक वास्तुकला और म नोरंजक स्थान हैं, जो कोषिक्कोड के ज़मोरिन युग की विरासत को दर्शाता है। कोषिक्कोड के मध्य में स्थित मानानचिरा स्क्वायर एक प्रमुख सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थल है जो शहर के लिए एक शांत विश्राम स्थल प्रदान करता है। मानानचिरा स्क्वायर के साथ एक झील भी है, जिसके किनारे एक ओपन–एयर थिएटर, संगीतमय फव्वारे और पारंपरिक केरल शैली की स्थापत्य संरचनाएँ हैं, जो इसके सौंदर्य और बढ़ाती हैं।

इसके अलावा और भी मनमोहक पर्यटन स्थल कोषिक्कोड में है।

यहाँ के लोगों की मैत्री एवं एकता भी प्रसिद्ध है। एक और ओणम, ईद, क्रिसमस, विषु, होली, दीपावली जैसे हर धर्म के त्योहारों को एक साथ, मिल जुल कर मनाते हैं और दूसरी तरफ़ सुनामी, कोविड, निप्पा वायरस, बाढ़ जैसी आपदाओं का भी लोग एक साथ मिलकर सामना करते हैं। मानवता का यह संदेश पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता रहता है, और बढ़ता ही रहेगा...

अनूप पी.
राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

कुम्भ मेला क्षेत्र - प्रयागराज में बैंक ऑफ इंडिया

बैंक ऑफ इंडिया ने प्रयागराज में कुंभ मेले के पवित्र सम गम में एक शाखा और एटीएम स्थापित करके लाखों भक्तों के लिए निर्बाध वित्तीय सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित की। शाखा और एटीएम की उपलब्धता ने कुम्भ मेले में आध्यात्मिक यात्रा पर पहुंचे हमारे अनेक ग्राहकों के लिए बैंकिंग की सुविधा को निर्बाध जारी रखा। कुम्भ मेले की अवधि के दौरान बैंक ने तीर्थयात्रियों के लिए पेयजल की सुविधा भी उपलब्ध कराई। यह सेवा दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में शामिल कुम्भ मेले के दौरान ग्राहक सेवा और सामाजिक सहायता के प्रति बैंक के समर्पण को दर्शाती है। कुम्भ मेले के दौरान बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित कुछ गतिविधियों के फोटो निम्नानुसार हैं:

दिनांक 26/01/2025 को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर कुम्भ मेला क्षेत्र में वाराणसी अंचल द्वारा स्टाफ सदस्यों ने आम जनता के साथ ध्वजारोहण किया गया ।

कुम्भ मेला क्षेत्र में कार्यपालक निदेशक श्री कार्तिकेयन महाप्रबंधक एमजीएमओ श्री अमरेन्द्र कुमार आंचलिक प्रबन्धक श्री राजेश रॉबर्ट

वाराणसी अंचल द्वारा कुम्भ मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं हेतु निशुल्क जल सेवा का आयोजन किया गया

कुम्भ मेला क्षेत्र में प्रधान कार्यालय से महाप्रबंधक श्री वासुदेव, आंचलिक प्रबन्धक वाराणसी अंचल श्री राजेश रॉबर्ट एवं अन्य स्टाफ सदस्य

विविध गतिविधियाँ

CREDAI द्वारा ठाणे, महाराष्ट्र में आयोजित प्रॉपर्टी एक्सपो में महाप्रबंधक श्री चंद्र मोहन कुमरा ने बीओआई स्टॉल का उद्घाटन किया।

गांधीनगर अंचल, थरद (Tharad) शाखा का उद्घाटन

दिनांक 27.02.2025 को धनबाद अंचल में एक नई शाखा - मेहरमा का उद्घाटन

नासिक अंचल में अमलनेर शाखा का उद्घाटन

मुंबई उत्तर अंचल की ठाकुर विलेज (कांदिवली पूर्व) शाखा का उद्घाटन फील्ड मुख्य महाप्रबंधक, मुंबई श्री सुनील शर्मा ने किया।

10 मार्च 2025 को चेनलोईशो, नागालैंड में नयी शाखा का उद्घाटन

सूरत आंचलिक कार्यालय के परिसर के बाहर 16 जनवरी से 31 जनवरी 2025 तक चलने वाले स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत एक मानव श्रृंखला का निर्माण किया।

हजारीबाग आंचलिक कार्यालय के बाहर 16 जनवरी से 31 जनवरी 2025 तक चलने वाले स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत वृक्षारोपण किया गया।

बैंक ने तेलंगाना राज्य पुलिस के साथ वेतन खातों के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

बैंक ऑफ इंडिया ने कृषि ड्रोनों के वित्तपोषण हेतु गरुड़ एयरोस्पेस प्रा लि के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

बैंक ऑफ इंडिया ने वेतन खाता योजना के अंतर्गत मझगांव डॉक के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

भोपाल अंचल ने मेसर्स बेंड ज्वाइंट प्रा लि के साथ वेतन खाते खोलने के लिए समझौता किया।

इंदौर, 31 जनवरी 2025: बैंक ऑफ़ इंडिया और मध्य प्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड के बीच वेतन खाता समझौता हुआ।

12 मार्च, 2025 को बैंक ऑफ इंडिया ने नवदीप अस्पताल के साथ वेतन खाता पैकेज देने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

अहमदाबाद अंचल सुश्री अनेरी त्रिवेदी ने भावनगर में आयोजित 'खेल महाकुंभ 3.0 तैराकी प्रतियोगिता 2025' में 01 स्वर्ण पदक, और 02 रजत पदक प्राप्त किए हैं।

स्वच्छ भारत अभियान के तहत, रायगढ़ अंचल द्वारा प्रसिद्ध किला जंजीरा मुरुद के क्षेत्र में स्थानीय प्रशासन को कूड़ेदान बॉक्स प्रदान किए।

Bank of India
BUDGETS - FY'26

BUSINESS: (Rs. Crore)

Parameter	FY'25 - Actual	FY'26 - Budget	FY'26 - Growth - %
Global			
Business	**1,482,588**	**1,655,000**	**11.63%**
Total Deposits	816,541	900,000	10.22%
Gross Advances	666,047	755,000	13.36%
CD-Ratio	81.57	83.89	
Domestic			
Business	**FY'25 - Actual**	**FY'26 - Budget**	**FY'26 - Growth - %**
Total Deposits	700,298	777,000	10.95%
Gross Advances	563,550	645,400	14.52%
CD-Ratio	80.47	83.06	
Overseas			
Business	**218,740**	**232,600**	**6.34%**
Total Deposits	116,243	123,000	5.81%
Gross Advances	102,497	109,600	6.93%
CD-Ratio	88.18	89.11	

CASA (Rs. Crore)

Parameter	FY'25 - Actual	FY'26 - Budget	FY'26 - Growth - %
Savings Deposits	244,702	265,000	8.29%
Current Deposits	35,581	38,170	7.27%
CASA	**280,284**	**303,170**	**8.17%**
CASA (%)	**40.28**	**40.21**	

SECTORAL CREDIT: (Rs. Crore)

Parameter	FY'25 - Actual	FY'26 - Budget	FY'26 - Growth - %
Retail	134,533	161,900	20.34%
Agriculture	101,538	116,900	15.13%
MSME	100,595	119,700	18.99%
RAM Advances (Total)	336,666	398,500	18.37%
RAM Advances (Gross)	**322,673**	**385,500**	**19.47%**
RAM (%) - Gross	**57.26**	**59.73**	
Corporate & Others	272,273	292,900	7.58%

प्रधान कार्यालय में गणतंत्र दिवस का आयोजन